Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान [मासिक]

(१६ दिसम्बर १९८७ से १५ जनवरी १९८८ तक)

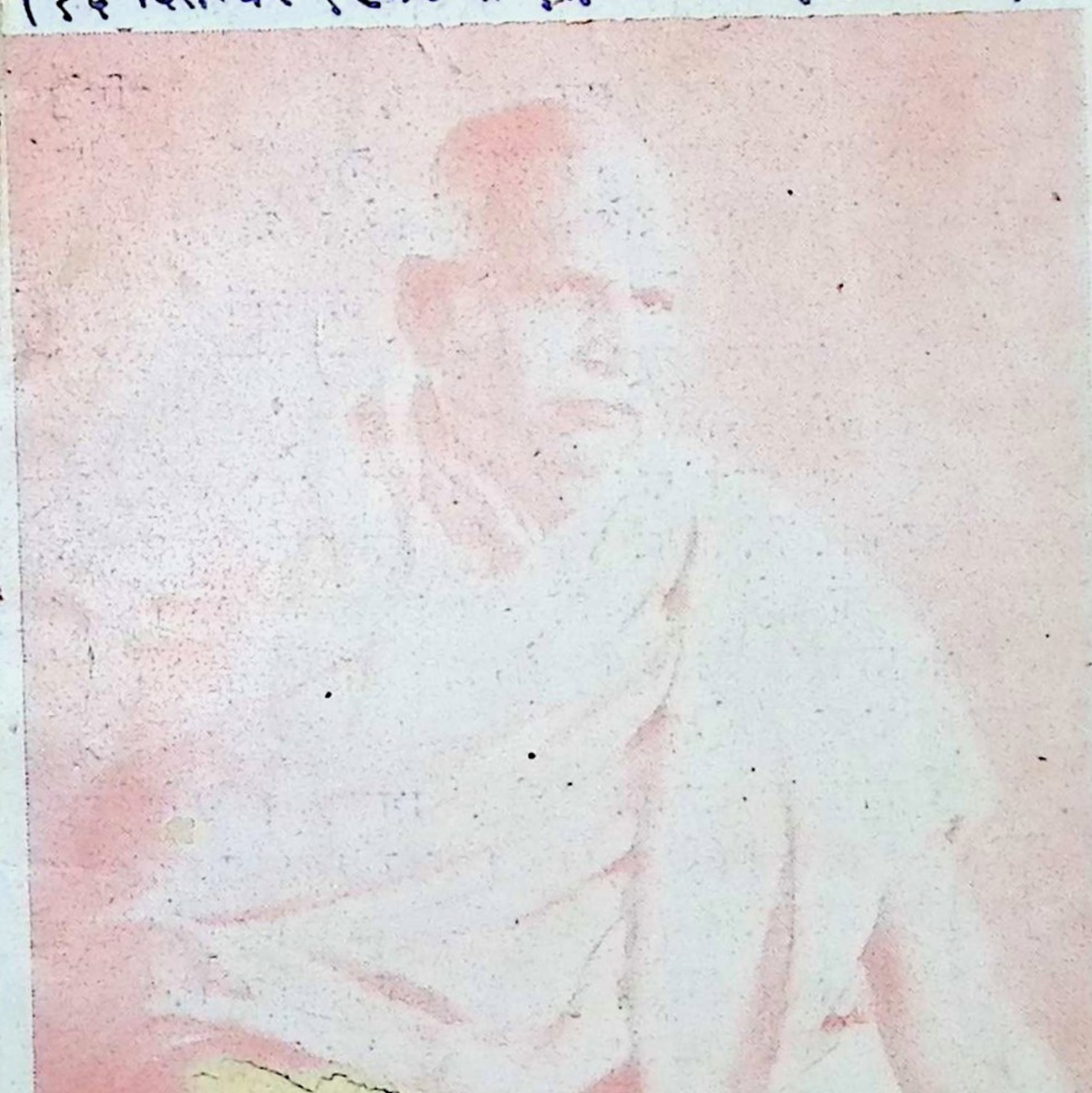

...क से 7 पौंड, 12 डा... है।

...जीवन : 501 रुपये

विदेश में : 1501 रु...

यह अंक : तीन रु...

दिसम्बर 1987 : ...

...वाले निरंकारी हरयाणा में पूरे अ...

...पाण स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः जी, जिनकी चौथी पुण्यतिथि है।

पौष सवत् २०४४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद मन्दिर (महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम)
हमारी कार्यस्थली

दयानन्द संस्थान, जनज्ञान प्रकाशन, हिन्दू रक्षा समिति आदि सभी संगठनों का कार्य संचालन अब इब्राहीमपुर ग्राम दिल्ली-३६ के निकटवर्ती महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम से ही होगा।

करौलबाग, नई दिल्ली-५ स्थित कार्यालय भी आश्रम में स्थानान्तरित किया जा रहा है। वेद मन्दिर, यज्ञशाला, गोशाला, औषधालय आदि पहले से ही वहां धर्म प्रचार और सेवा कार्य के केन्द्र के रूप में कार्य कर रहे हैं। इस सब कार्यकलाप की प्राण पण्डिता राकेशरानी जी आश्रम में ही निवास करेंगी। उनसे सम्पर्क करने के इच्छुक वहीं सम्पर्क करें। जनता को असुविधा न हो, इस लिए करौलबाग कार्यालय भी दोपहर बाद एक बजे से सायंकाल पांच बजे तक खुला रहेगा।

इब्राहीमपुर ग्राम आजादपुर से लगभग दस किलोमीटर आगे है - उत्तरी दिल्ली क्षेत्र में पड़ता है। अन्तर्राज्यीय बस अड्डा [मोरी गेट] और आजादपुर से बस रूट नम्बर १३४ एवं अं० व० अड्डे से बस रूट नम्बर १६२ इब्राहीमपुर और निकटवर्त्ती नत्थूपुरा ग्राम तक जाती हैं। बस रूट नम्बर १६२ अ० व० अड्डे से वेद मन्दिर से होती हुई बख्तावरपुर ग्राम तक जाती है।

दिल्ली से अपने वाहन पर आने [illegible] कालोनी से होते हुए वेद मन्दिर पहुंच सकते हैं [illegible] चारे जी० टी० रोड मोड़ निकटवर्त्ती बख्तावर [illegible] वेद मन्दिर पहुंच सकते हैं।

प्रबन्धक-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य के लिए संघर्ष करो ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—राकेशरानी
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-110036
फोन नं. : 745325
कार्यालय—2286, आर्यसमाज मार्ग,
नई दिल्ली-110005
फोन—5724741
वार्षिक मूल्य : 35 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड,
60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
आजीवन : 501 रुपये
विदेश में : 1501 रुपये
यह अंक : तीन रु.
दिसम्बर 1987 : वर्ष 20, अंक 8

वेदोपदेश

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्ष सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां 2 आविवेश ।। यजुर्वेद १७-९१

पदार्थ—(चत्वारि शृङ्गा) चार दिशाएं सींगवत (त्रयः अस्य) (तीन इसके काल पादः) चरण हैं तीन अथवा तीन भुवन चरण के समान हैं। (द्वे शीर्षे) पृथ्वी और द्युलोक दोनों शिर हैं। (अस्य सप्त हस्तासः) महत अहंकार और पांच भूत ये सात इस भगवान् के हाथ हैं। (त्रिधा बद्धः) सत चित् आनन्द इन तीन स्वरूपों में बद्ध है, वह (वृषभ) सब सुखों की वर्षा करने वाला और सारे जगत् को उठाने वाला (रोरवीति) वेद ज्ञान का उपदेश कर रहा है, वह (महः देवः) महादेव (मर्त्यान्, आविवेश) मरणधर्मा मनुष्यों और विनश्वर सब पदार्थों में भी व्यापक है।

ऐसे प्रभु को जानना चाहिये ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय महात्मा वेदभिक्षु: का पुण्य समरण; त्यगना होगा इन प्रवृत्तियों को 3

महात्मा वेदभिक्षु: की अमर वाणी (अमृत का मार्ग) 9

स्वामी श्रद्धानन्दजी के पत्र : दिल्ली की बात 11

'भारत' का शैशव 17
(20 दिसम्बर को पुण्य तिथि के अवसर पर)
—सत्यपाल शास्त्री

'भारत' की माता कवयित्री भी थीं 24
भाई भारतेन्द्र नाथ जी की याद
—रामकृष्ण 'भारती' 26

धर्म प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां 30

मैं इन्द्र हूं (अध्यात्मधारा)
—विक्रमादित्य 'वसन्त' 32

सच्चा संन्यासी (कहानी)
—देव 49

जिन्दा लाश की तरह जीने को विवश ये विधवाएं
—रेणु रावत 52

आज का इन्सान
— क्षमा सरीन 57

सरदार वल्लभभाई पटेल
—बलराज मधोक 58

सामवेद का हिन्दी पद्य नुवाद (कवयित्री की ओर से दो शब्द)
—मृदुल कीर्ति 61

सत्य —अभयदेव विद्यालंकार 65

भाई —सत्यपाल सक्सेना 68

अर्चना हो —राकेशरानी 72

बीति ताहि बिसार दे आगे की सुध ले —यशपाल आर्य 74

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

महात्मा वेदभिक्षुः का पुण्य स्मरण

चार वर्ष बीत गए। वे (महात्मा वेदभिक्षुः) सशरीर हमारे समक्ष नहीं रहे। हमने अपनी पथराई आंखों से उनके पार्थिव देह को अग्नि की ज्वालमालाओं में समर्पित होते हुए निहारा था। उस अवसर पर सहस्रों आबालवृद्ध नर-नारियों के नेत्रों से अश्रुकण छलक उठे थे। उस दिन हमें कुछ ऐसा आभास हुआ था कि मानों वे अनन्त यात्रा के पथ पर गमन करते हुए निर्देश दे रहे हैं कि मैंने वेद के पावन प्रचार और हिन्दू राष्ट्र को वैभव के उच्चतम शिखर पर देखने का जो सपना संजोया था, वह अभी अधूरा है। ऐसा लगा था कि वे अनन्त धाम के अपने प्रवास पर जाते-जाते अपने प्रति आस्था रखने वाले हम सभी का आह्वान कर रहे हैं कि "देव दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के ध्येय की पूर्ति और अजेय एवं कुरीतिमुक्त हिन्दू राष्ट्र के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए सतत संघर्ष करने को ही मेरे प्रति श्रद्धांजलि समर्पण का एकमात्र मार्ग मानना।"

हमने उसी क्षण संकल्प लिया था कि आजीवन उनके सपनों की पूर्ति के लिए संघर्षरत रहना ही हमारे जीवन की राह बनेगी। हम यथाशक्ति अपने उस संकल्प को निभा रहे हैं। अभाव, अभियोग और आपदायें झेलते हुए भी हम वैदिक ज्ञान गंगा को अग-जग में पहुंचाने के लिए उस आग्नेय जीवन व्रती द्वारा ग्रहण किये गये संकल्प की पूर्ति हेतु अपने जीवन का क्षण-क्षण और रक्त का कण-कण लगा रहे हैं। हमें विश्वास है कि हम अकेले नहीं हैं। हमारे साथ महात्मा वेदभिक्षुः का पावन आशीष है और उनके प्रति आस्थावान 'जनज्ञान' के सहस्रों पाठकों का सहयोग हमारा सम्बल है।

महात्मन् आपके पुण्यस्मरण की इस वेला में हम आपको पुनः विश्वास दिलाते हैं कि आपने जो राह दिखाई है, हम उस पर सतत बढ़ते रहेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधना के इस पथ पर सर्वस्व समर्पण का हमारा संकल्प कदापि मन्द नहीं होगा। जब तक हमारे पार्थिव शरीर में प्राण हैं, हम वेद के पावन उद्घोष और हिन्दू संगठन के महायज्ञ को गतिमान् रखेंगे।

हमें विश्वास है 'जन-ज्ञान' और दयानन्द संस्थान के उन सहस्रों पारिवारिक जनों पर जिन्होंने महात्माजी के विचार और आह्वान पर राष्ट्र-धर्म को बलिष्ठ बनाने का संकल्प अपने मानस में संजोया था महात्मन् हम आपका पावन स्मरण कर आज आपके इस स्मृति दिवस (बीस दिसम्बर) पर पुनः अपना संकल्प दोहराते हैं। आपकी पावन स्मृति में अर्पित हैं कोटि कोटि श्रद्धासुमन।

त्यागना होगा इन प्रवृत्तियों को

दो युगों के संधि-स्थल पर खड़ा है आज अपना यह महान् देश। एक युग मरणासन्न है—दूसरा जन्म नहीं ले पा रहा। देश के सत्तारूढ़ पक्ष में बिखराव की तो चर्चा है किन्तु उसका विशुद्ध राष्ट्रवादी और लोकतान्त्रिक विकल्प उभर नहीं पा रहा। राष्ट्रविरोधी एवं अलोकतान्त्रिक शक्तियां विभिन्न मुखौटे लगा कर इस स्थिति का लाभ उठाने के लिए योजनाबद्ध ढंग से सक्रिय हैं। वे भारतीय राज्य को बहुराष्ट्रीय राज्य कहने पर तुले हुए हैं। इस तथ्य को तो अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि हिमगिरि की उत्तुंग शैलमालाओं से कन्या कुमारी तक अनेक भाषायें बोलने वाले और उपासना पद्धतियों का अवलम्बन करने वाले कोटि-कोटि जन निवास करते हैं। परन्तु यह भी सत्य है कि इस देश के निवासियों की राष्ट्रीयता तो एक ही है। मुस्लिम लीग द्वारा प्रतिपादित द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त का कटु फल इस शस्य-श्यामला भारत भूमि के विभाजन के रूप में सामने आया था। अतएव भारत को बहुराष्ट्रीय राज्य के रूप में चित्रित करने की इस प्रवृत्ति पर समय रहते अंकुश नहीं लगाया गया तो इस महान् देश को अनेक टुकड़ों में विभाजित करने के नापाक इरादों को मन में संजोने वाली शक्तियों की इच्छाओं पर खाक नहीं पड़ पायेगी। अतः इस प्रवृत्ति के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
विरुद्ध सत्तापक्ष एवं राष्ट्रनिष्ठ विपक्ष दोनों के लिए सतर्कता का अवलम्बन करना ही युगधर्म है।

स्वाधीनता के चालीस वर्ष बाद और संविधान की रचना के ३१ वर्ष बाद भी अस्पृश्यता जैसे प्रश्नों पर अनावश्यक तथा निष्प्रयोजन विवाद आज भी अनेक बार उभरता रहता है। वस्तुतः जिस दिन हमने संविधान की प्रस्तावना में भारत के सभी लोगों के लिए अवसर की समानता प्राप्त करने तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुत्व भावना बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होने की घोषणा कर दी थी, उसी दिन हमने जन्म, वंश और आजीविका के आधार पर मानव-मानव के बीच भेद भाव अथवा पक्षपात के विरुद्ध राष्ट्रीय मनीषा का उद्घोष कर दिया था। आज जो लोग शास्त्रों के आधार पर अस्पृश्यता का समर्थन करते हैं, वे न केवल संविधान की प्रस्तावना में निहित राष्ट्रीय संकल्प को चुनौती देते हैं, अपितु समाज के उपेक्षित और पिछड़े बन्धुओं की भलाई के लिए अब तक किये गये सभी राष्ट्रीय प्रयासों पर पानी फेरने की भूल भी करते हैं। संविधान के अनुच्छेद समूह के अन्तर्गत अस्पृश्यता का अन्त कर दिया गया है और उसका किसी भी रूप में मण्डन निषिद्ध है। इसके बाद भी कुछ विद्वज्जन अस्पृश्यता का समर्थन करते हैं तो यही कहा जा सकता है कि "हे परमात्मा, उन्हें क्षमा कर दे। वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।" अस्पृश्यता कानून के विरुद्ध ही नहीं, मानवता के विरुद्ध भी गम्भीर अपराध है। अस्पृश्यता हमारे राष्ट्रीय जीवन का कलंक है। जब तक हम इस कलंक को पूर्णतः मिटा नहीं देंगे, हम संसार के समक्ष भारत की, वह जगद् गुरु की छवि नहीं उभार सकेंगे, जिसके सम्मुख कभी सारी दुनिया नतमस्तक होती थी।

हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की एक महान् विशेषता युगानुकूल अपेक्षित परिवर्तन की क्षमता से युक्त होने की रही है। धर्म के शाश्वत स्वरूप की रक्षा करते हुए भी हमने कभी युगधर्म की उपेक्षा नहीं की। समय पर परिवर्तन के साथ आचरण के मानदंड बदलते रहे हैं। कुछ क्षेत्रों में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह भ्रांति भी है कि अस्पृश्यता वर्णव्यवस्था की देन है। जहां तक वेदों का सम्बन्ध है, उनमें वर्णव्यवस्था की चर्चा तो है, लेकिन अस्पृश्यता का तो कहीं नामोल्लेख भी नहीं। वैदिक युग में जिन्हें शूद्र की संज्ञा दी जाती थी, वे भी अध्ययन, यज्ञ और भोजन में सहभागी होने के अधिकारी थे। यहां तक कि एक ही पिता के अनेक पुत्रों में एक ब्राह्मण और एक शूद्र के रूप में भी जाना जा सकता था। रामायण तथा महाभारत काल में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जब आजीविका के आधार पर वर्ण परिवर्तन हो जाता था।

आज जो सती प्रकरण अत्यधिक चर्चा का विषय बना हुआ है, उसके सम्बन्ध में भी हमें कतिपय तथ्यों पर गहनता से विचार करना होगा। हम जहां "मजहब के मामलों में शासन को हस्ताक्षेप करने का हक नहीं है" का स्वर तथाकथित प्रगतिशील तत्त्वों को भी गुंजाते हुए पाते हैं, वहीं यह भी देखते हैं कि यही तत्त्व हिन्दू समाज से किसी मामले के सम्बद्ध होने की स्थिति में तुरन्त प्रशासनिक हस्तक्षेप के पक्षधर बन जाते हैं। सती काण्ड के प्रसंग में भी आज स्थिति कुछ ऐसी ही है। हम जहां मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में कट्टरतावादी तत्त्वों के समक्ष किये गये समर्पण के विरोधी हैं, वहीं हिन्दू समाज में व्याप्त किसी कुप्रथा के विरुद्ध अभियान में आनाकानी के भी पक्षधर नहीं। हिन्दू धर्म के प्रत्येक पक्ष के सांगो पांग विवेचन का तो हम अपने आपको पूर्णतः अधिकारी नहीं मानते किन्तु इस महान् धर्म का हमारा जो थोड़ा-सा अध्ययन है, उसके आधार पर हमारा यह मानना है कि किसी नारी के सती होने का तात्पर्य अपने पति के पार्थिव देह के साथ अपना दहन करना नहीं। हमारे विचार में अर्धांगिनी जलती नहीं, पति के जीवित रहते उसकी पूरक बनती है और उसके देहावसान पर उसके लक्ष्यों की पूर्ति करती है। सनातन और वैदिक परम्परा के अनुसार अपने सत्—अपने धर्म पर सुदृढ़ रहने वाली नारी ही वास्तविक अर्थों में सती है। पार्वती, अनसूया, सीता, सावित्री तथा दमयन्ती जैसी देवियों की गणना इसी श्रेणी में की जाती रही है। 'सती' प्रथा के कुछ समर्थक सुलोचना के प्रसंग की प्रायः चर्चा कर रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु वे इस तथ्य को भुला रहे हैं कि वह एक पृथक् संस्कृति की अनुगामिनी थी, जिसमें शरीर और भोग को प्रधानता प्राप्त थी । उसके दहन से यही ध्वनित होता है कि उसे अपने पति के नश्वर शरीर से प्रेम था, न कि अजर और अमर आत्मा से, जो अनश्वर है । तभी तो वह उसका वियोग सहन नहीं कर सकी । लगता यही है कि मूल भावना को विस्मृत कर हिन्दू समाज में भी कुछ लोगों ने कभी इस प्रथा को दो संस्कृतियों के संगम-स्वरूप अपना लिया होगा । इसके साथ ही चित्तौड़ दुर्ग में अनेक वीर क्षत्राणियों द्वारा किये गए सराहनीय जौहर को भी हमें नहीं भुलाना । इस सम्बन्ध में हमारी मान्यता है कि उस जौहर को इस सती प्रथा के साथ नत्थी नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वह तो विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा किये जाने वाले संभावित सामूहिक बलात्कार का शिकार होने से बचने का एक वरेण्य विकल्प था । और उसमें तो विवाहित देवियों ने ही नहीं, अपितु अनेक कुमारी कन्याओं ने भी अपनी नश्वर काया को प्रसन्न मन से अग्नि की ज्वालमालाओं को समर्पित किया था । वास्तव में जीवित रहकर अपने पति द्वारा अधूरे छोड़े गये कार्यों की पूर्ति करना और उसके स्वप्नों को साकार करने के लिए सचेष्ट रहते हुए जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष करना ही वास्तविक सती धर्म है ।

हम हिन्दू समाज के उस शुद्ध स्वरूप की रचना हेतु कटिबद्ध हैं, जिस में सभी को समान अवसर और स्वतन्त्रता प्राप्त होगी । जन्म, वंश और आजीविका के आधार पर किसी को छोटा या बड़ा, सवर्ण या असवर्ण नहीं माना जाना चाहिये । समय की मांग है कि हिन्दू समाज को अंधविश्वासों, रूढ़िवाद एवं संकीर्णता से मुक्त कर आत्मीयता के सुदृढ़ सूत्र में आबद्ध करने के लिए एक देशव्यापी अभियान चलाया जाये और स्वयं को हिन्दुत्व का पक्षधर एवं हिन्दू राष्ट्रवाद का संवर्धक मानने वाले संगठन इसमें सहभागी बनें, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत समाज सुधार का वह कार्य पीछे पड़ता जा रहा है, जिसे देव दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महामना पंडित मदनमोहन मालवीय, देवतास्वरूप भाई परमानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर जैसे युगद्रष्टाओं ने अपने राष्ट्र जागरण अभियान का मुख्य सूत्र बनाया था। हमें उसी सूत्र को पुनः पूर्ण निष्ठा के साथ अपने हाथों में थामना होगा समग्र हिन्दुस्तान। यह भारत भूमि ही हमारी निष्ठाओं का केन्द्र है। भारत के कोटि-कोटि जन ही हमारे आराध्य हैं। हमें अपनी स्वतन्त्रता को अमरत्व प्रदान करना है। राष्ट्रीय अखण्डता को भी अक्षुण रखना है। यदि हमें स्वाभिमान तथा सम्मान के साथ जीवित रहना है तो हमें भारत को सबल, सुदृढ़, शक्ति-सम्पन्न और समृद्ध राष्ट्र बनाना होगा। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो भी साधन, नीतियाँ और कार्यक्रम आवश्यक हैं उनका निर्धारण और क्रियान्वयन करने के लिए हमें कंधे से कंधा मिलाकर कदम से कदम मिलाकर अपनी जययात्रा को ध्येय सिद्धि के शिखर तक पहुंचाना होगा। यही भारत माता की सेवा की सार्थक विधि है।

आप ही के पत्र

आप क्रान्तिकारी विचारों के प्रेरक हैं

पूज्या बहन राकेशरानी जी, नमस्ते

आप क्रान्तिकारी विचारों की प्रेरक हैं। आप जैसी बहनों ने इस देश का नाम ऊंचा किया है। आपके नाम के साथ रानी शब्द जुड़ा हैं। आप जैसी कोई अन्य रानी-महारानी नहीं हुई। सम्भवतः होगी भी नहीं।

देहरादून, शिवनाथ आर्य

यह आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों के विचारों से पूर्णतया सहमत हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमृत का मार्ग

अमृत क्या है ? जिसका पान कर कभी मृत्यु न आए।

मृत्यु न आए का क्या अर्थ, यह शरीर तो नष्ट होगा ही। फिर मृत्यु न आए, यह कैसे संभव ?

मृत्यु होती है शरीर की, मेरी नहीं। मैं तो कभी मरता ही नहीं। जो मुझे इस सत्य का ज्ञान करा दे कि मैं मृत्यु की पहुंच से बाहर हूं, अमर हूं, वही अमृत है।

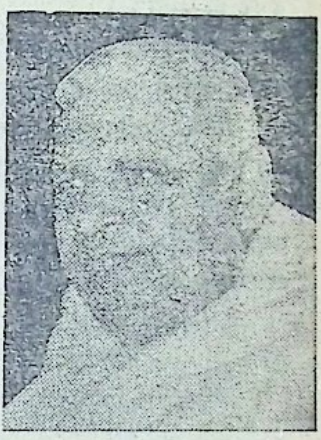

अमृत का लाभ ? लाभ है सत्य का ज्ञान। सत्य को जान कर व्यक्ति दुःखों से छुटकारा पा लेता है। अमृत का पान कर इस देह में रहते हुए भी मैं दुःख से दूर रहता हूं। क्या यह काम उपलब्धि है ?

अमरता के लिए सभी तरसते हैं, किन्तु वे भूल जाते हैं कि सचमुच में व्यक्ति अमर ही हैं। अज्ञान ही उसे मृत्यु का बोध कराता है। शरीर आत्मा का साधन है। किन्तु अज्ञान शरीर को ही अपना रूप समझने का भ्रम उत्पन्न कर आत्म तत्त्व को गहन अन्धकार में डाल देता है।

इस धरती पर दुःख नहीं है। दुःख तब आता है, जब ज्ञान लुप्त हो जाता है। जहाँ ज्ञान है वहां दुःख नहीं हो सकता। यही ज्ञानस्थिति की कसौटी है।

आप स्वयं चिन्तन करें। इस संसार में दुःख क्यों होता है ? सोचिए तो आप हम से सहमत होंगे कि दुःख तब होता है जब ऐसी कोई वस्तु हमसे पृथक् हो जाती है जिससे हम प्रेम करते हैं। आप की घड़ी हजार रुपए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की भी खो जाए तो मुझे दुःख नहीं होगा, पर अगर मेरी साधारण-सी भी घड़ी खो जाए तो मुझे कई दिन तक नींद नहीं आएगी, क्योंकि मैं अपनी घड़ी से प्रेम करता हूं। प्रतिदिन न जाने कितने बच्चे मरते हैं। मुझ पर कोई असर नहीं होता किन्तु यदि मुझे यह ज्ञान हो जाए कि मेरे बच्चे का देहान्त हो गया है तो मुझ पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ेगा। अतः यह सर्वमान्य तथ्य है कि दुःख व्यक्ति को तभी होता है जब उसकी कोई प्रिय वस्तु उससे पृथक हो जाती है।

और यह भी सत्य है, निश्चित है कि बिना मोह-ममता और प्यार के व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता—प्यार मेरा स्वाभाविक धर्म है।

यह भी निर्णीत तथ्य है कि जो जैसा होता है, वह वैसी ही वस्तु से प्रेम करता है। समान गुण धर्म वाली वस्तुओं का सान्निध्य शीघ्र होता है।

उक्त विचार-विमर्श से आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि जब तक आप अपने को शरीर रूप में जानते हैं, तब तक आप शरीर के समान गुण धर्म वाली वस्तुओं से प्रेम करेंगे। और जो कुछ भी संसार में इन्द्रियों द्वारा देखा-सुना-समझा जा सकता है उन सब ने नष्ट अवश्य होना है। अपने को शरीर मान कर हमने इन भौतिक पदार्थों से प्रेम अवश्य करना है। अतः इनके नष्ट होने पर हमें दुःख भी अवश्य होगा।

किन्तु यदि थोड़ा सा मार्ग बदल जाए। अज्ञान का परदा हटाकर ज्ञान प्रविष्ट हो जाए और हम केवल यह समझ लें कि मैं शरीर नहीं कुछ और हूं—क्या हूं यह प्रश्न तो बहुत गहरा है पर मैं केवल इतना जान लूं कि मैं वह हूं जो कभी मरता नहीं तो मेरा प्यार जागेगा उस वस्तु के प्रति, जो कभी मरती नहीं। मेरे अतिरिक्त ऐसा कौन है जिससे मैं प्यार करूं? खोजूंगा तो मुझे अपना प्रिय मिलेगा—प्रभु ओ३म्। तब मेरा सारा मोह, प्यार, ममता उसके प्रति उमड़ेंगे, और वह कभी मरता नहीं, नष्ट होता नहीं तो फिर मुझे दुःख कैसे होगा?

दुःख से छूटने के लिए अपना ज्ञान आवश्यक है और जो अपना ज्ञान कराए वह अमृत है। हम सब प्रभुभक्त अमृत पान करें तो हमारा यह जीवन सफल हो जाए। (अक्तूबर सन् 1971 के जनज्ञान मासिक से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी श्रद्धानन्द जीके पत्र : दिल की बात

—सत्यकाम विद्यालंकार

दिसम्बर को अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है इस अवसर पर हम उनके पुत्र पंडित इन्द्रविद्या वाचस्पति के नाम उनके पत्र प्रकाशित कर रहे हैं।

किसी भी व्यक्ति के सच्चे चरित्र का ज्ञान उसके सार्वजनिक कार्यों, उपदेशों अथवा भाषणों से उतना नहीं हो सकता, जितना उसके व्यक्तिगत वार्तालाप अथवा किसी अत्यन्त निकट व्यक्ति को लिखे गये कुछ ऐसे पत्रों से हो सकता है। यहां हम स्वामी श्रद्धानन्दजी द्वारा लिखे गए कुछ ऐसे पत्रों के अंश उद्धृत कर रहे हैं, जो उन्होंने सर्वथा व्यक्तिगत रूप से अपने प्रिय पुत्र पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति को लिखे थे। इन पत्रों का विषय भिन्न-भिन्न है। किन्तु लेखक एक ही है, इसलिए इनमें उनकी आत्मा का प्रतिबिम्ब मिलता है। उनके गुणों की गहराई की थाह मिलती है।

पं० इन्द्रजी की जीवन लिखते हुए उनकी फाइलों से जो पत्र मुझे अकस्मात् मिले थे, उन्हीं में से कुछ का हवाला देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के सत्य-निष्ठा, त्याग-तपोमय, परम कारुणिक हृदय की एक झलक पाठकों के सम्मुख रखने का यत्न किया गया है।

इन पत्रों में सबसे पुराना पत्र 12 दिसम्बर, सन् 1911 का है। यह पत्र तब का है, जब प्रिन्स आफ वेल्स प्रथम बार भारत में आए थे और उनका स्वागत किया गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी उस समय गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य थे और आर्यसमाज के अन्यतम नेता थे। उन्हीं दिनों लाला लाजपतराय तथा भाई परमानन्द को मांडले जेल ले जाकर बाद में छोड़ा गया था। आर्यसमाज और गुरुकुल पर राजद्रोही होने के सन्देह में ब्रिटिश सरकार दोनों संस्थाओं से बहुत रुष्ट थी।

स्वामी श्रद्धानन्दजी ने उस समय बहुत बलपूर्वक कहा था कि आर्यसमाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजनैतिक संस्था नहीं है, इसलिए वह किसी भी राजकीय आन्दोलन के पक्ष या विपक्ष में योगदान नहीं करेगी। कुछ गरमदली राजनैतिक नेता उस समय आर्यसमाज से यह आशा रखते थे कि वह ब्रिटिश राज्य के उच्चतम अभ्यागत प्रतिनिधि प्रिन्स आफ वेल्स के स्वागत का बहिष्कार करेगी। किन्तु आर्यसमाज ने वैसा नहीं किया। बल्कि दिल्ली में स्वागत के सभी आयोजनों में भाग लिया एवं अपनी ओर से स्वागत मण्डप बना कर अभिनन्दन-पत्र भी दिया। इस घटना से स्वामी श्रद्धानन्द जी के कुछ विपक्षी मित्रों ने स्वामी जी पर यह दोषारोपण किया था कि वे हृदय से राजभक्त हैं और विदेशी सरकार को सहयोग दे रहे हैं। वस्तुतः स्वामी जी के हृदय में विदेशी राज्य के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होना सम्भव ही नहीं था। यह बात 12 दिसम्बर 1911 कुछ अंश इस प्रकार है—

"प्रिय पुत्र इन्द्र, नमस्ते !

दरबार जाने की तैयारी करके तुम्हें पत्र लिखने लगा हूं। 12 दिसम्बर के लिए तमाशागाह में मुझे भी जाना पड़ेगा। बहुत-से खुशामदियों ने धर्म की मिट्टी पलीद कर दी है। इसके रोकने का कुछ उपाय सोचना होगा। प्रेस कैम्पवाले मुझ से घबराते ही रहते हैं। जो कुछ अंड-बंड करना होता है, उसमें मुझ से पूछने का कोई साहस ही नहीं करता।

मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)

इस पत्र से बिल्कुल स्पष्ट है कि स्वामी जी दरबार में राजभक्त सहयोगी बनकर हाजिर होनेवालों को खुशामदी और धर्म की मिट्टी पलीद करनेवाले मानते थे। इस दरबार को भी उन्होंने तमाशागाह नाम देकर अपने दिल की बात कही थी।

उस समय लिखे गये इन पत्रों से स्वामी जी के हृदय में गुरुकुल के प्रति अनन्त प्रेम की भी अभिव्यक्ति होती है। 1912 के जनवरी महीने में उन्होंने इन्द्र जी को पत्र लिख कर इस बात की जानकारी दी है कि गुरुकुल की सेवा के लिए कितने निःस्वार्थ एवं पूर्णतया समर्पित सेवकों की अपेक्षा है। इस पत्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं।

"मेरे प्यारे पुत्र,

कल के पत्र में अपनी हार्दिक इच्छा का एक भाग प्रकाशित कर चुका हूं। किन्तु आज अपना सारा तात्पर्य तुम्हारे सामने रखना चाहता हूं। इस विषय में और किसी से भी न बात कर सकता हूं, और न करूंगा।

मैंने देखा है कि गुरुकुल का काम जितना महान् है; उतना ही महान् बलिदान चाहता है। जिस मनुष्य की कोई भी अन्य सांसारिक या पारमार्थिक कामना हो, उसके लिए गुरुकुल को उन्नत करने का काम बड़ा कठिन काम है। यही कारण है कि न तो विवाहित पुरुष ही यहाँ पूरी तरह उपयोगी हो सकते हैं, और न वे व्यक्ति, जो विवाहित तो नहीं, किन्तु जिनके मन में किसी भी अन्य लौकिक या पारमार्थिक काम की लगन है। अब प्रश्न यह है कि क्या तुम्हारी भी रुचि विवाह की ओर है? यदि है, तो तुम्हारे प्रेम का बड़ा भाग उधर व्यय हो जायेगा। गुरुकुल का कुलपति बनने के लिए आवश्यक है कि वह व्यक्ति गुरुकुल को ही माता-पिता, भ्राता एवं धर्मपत्नी सबका स्थान दे। यदि कठिन आत्म-समर्पण का भाव दृढ़ता से तुम्हारे अन्दर है, तो गुरुकुल बड़ा भाग्यशाली होगा। यदि नहीं, तब भी गुरुकुल तुम्हारे सदाचार तथा उच्च भावों का अभिमान तो कर ही रहा है। मेरे प्यारे पुत्र, अपने मन की बात मैंने तुम्हारे सामने रख दी इस पर विचार करके जिस परिणाम पर पहुंचो, मुझे सूचित कर दो।

तुम्हारा सदैव संतुष्ट पिता
मुन्शी राम

प्रतीत होता है कि इसके उत्तर में पं० इन्द्रजी ने जो पत्र लिखा उससे स्वामीजी के मन में यह आशा जाग गई कि शायद उनका पुत्र सम्पूर्ण जीवन अविवाहित रहकर अपनी सेवाएं पूर्णतः गुरुकुल को समर्पित कर देगा। इसलिए उन्होंने संवत् 1970 के प्रारम्भ में प० इन्द्र जी को यह पत्र लिखा—

मेरे प्यारे पुत्र,

तुम्हारा पत्र अभी पहुंचा। पत्र पढ़ रहा हूं और बार-बार आनन्द की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अश्रुधारा बह रही है। परमात्मा ने इसी जन्म में मुझे कृतकार्य कर दिया। यह मेरा रोम-रोम अनुभव कर रहा है। मेरे प्यारे पुत्र, जिस दिन के लिए मैं रातों जागकर परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा और असह्य-से-असह्य दुःखों को सहन करता रहा, वह दिन आज मैंने देखा। इससे अधिक लिखने की कुछ शक्ति नहीं है। अभी तो इस आनन्द को ही बार-बार अनुभव करके आनन्दित होने दो।

तुम्हारा
मुंशीराम

स्वामी श्रद्धानन्दजी की हार्दिक इच्छा थी कि उनके पुत्र अपना जीवन गुरुकुल की सेवा में समर्पित करें। इसलिए उन्होंने बहुत बार आग्रहपूर्वक दोनों पुत्रों पर सांसारिक जीवन का परित्याग कर गुरुकुल-सेवा में ही जीवन व्यतीत करने के लिये कुछ दबाव भी डाला। दुर्भाग्य से स्वामीजी की यह इच्छा पूरी न हुई। दोनों पुत्र गृहस्थ बनकर गुरुकुल से वह सम्बन्ध स्थापित न कर सके, जिससे स्वामीजी को सन्तोष होता।

किन्तु इस असन्तोष को स्वामीजी ने बड़े धैर्य से झेला। स्वामीजी बड़े विशाल हृदय के थे। वे जितने शूरवीर, साहसी व कर्मठ थे, उतने ही क्षमाशील थे। अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार में उन्होंने स्वार्थ को कभी महत्त्व नहीं दिया। अपनी इच्छापूर्ति में कहीं आत्मतुष्टि की छाया भी देखी तो हृदय से प्रायश्चित्त का भाव प्रकट कर दिया। उनकी पवित्रता और विशालता का प्रमाण उनके उस पत्र से मिलता है, जो उन्होंने 1914 में पं. इन्द्रजी को लिखा। प्रतीत होता है कि स्वामीजी को उस समय अपने जीवन की पिछले 25 वर्षों की त्यागमय घटनाओं का स्मरण हो आया और उन्होंने अनुभव किया कि उन्होंने अपनी सन्तान के सांसारिक भविष्य को भी अपने ऊंचे आदर्शों पर कुर्बान कर दिया। पत्र के कुछ अंश निम्नलिखित हैं—

मेरे प्यारे पुत्र,

तुम्हारा पत्र कल दोपहर को मिला। उस समय से पांच बजे तक हरिश्चन्द्र से बातें करता रहा। फिर रात भर सोया नहीं। विगत 23 वर्षों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की सारी घटनाएं आंखों के सामने फिर गई तुम्हारे पत्र ने मेरी आंखें खोल दीं । मैंने उन सब घटनाओं पर विचार किया । तब मैंने पाया कि जो कुछ भी मैं करता रहा, उसमें आत्मतुष्टि की भावना भी थी । धन का त्याग किया, किन्तु लोकैषणा ने मुझे अपने पुत्रों की स्वतन्त्रता में रुकावट डालने की प्रेरणा दी । इस समय भी मुझे प्रतीत होता है कि मेरे अंदर लोकैषणा का सर्वथा अभाव नहीं हुआ था । यश के प्रति मेरी अभिरुचि किसी-न-किसी रूप में बनी ही रही है । इसी यश के लोभ में शायद मैंने कई बार तुम्हारे कोमल हृदय पर ठेस लगाई । क्या तुम उसे भूल सकोगे ? कुछ क्षणों में तुम पर सन्देह करके जो पाप मैंने किया है, वह भी मैं अनुभव कर रहा हूं । इसके लिए मैं स्वयं को अपराधी मानता हूं । मुझे उसका प्रायश्चित्त करना ही होगा ।

तुम्हारा सदा सन्तुष्ट पिता
मुंशीराम

इस प्रकार का पत्र लिखने के लिए जितने पवित्र हृदय की आवश्यकता होती है, वह स्वामी श्रद्धानन्दजी जैसे महापुरुष में ही हो सकती है ।

इन व्यक्तिगत पत्रों से उनके तपोमय जीवन की भी झलक मिलती है । स्वामी श्रद्धानन्दजी जीवन को पूर्णतः समाज सेवा में अर्पित कर चुके थे । उन्होंने अपनी सम्पत्ति का भी दान कर दिया था । सब प्रकार के कष्ट झेलते हुए भिक्षावृत्ति धारण कर ली थी । गुरुकुल के लिए लाखों रुपये मांगकर लाते थे, किन्तु गुरुकुल की ही सेवा करते हुए भी सेवा के पुरस्कार-स्वरूप एक दमड़ी अपने लिए नहीं रखते थे । यहां तक कि अपने रहन-सहन और भोजन का व्यय भी गुरुकुल की निधि पर न डालकर 'सद्धर्म-प्रचारक' पर डालते थे । परिणाम यह हुआ कि 'सद्धर्म प्रचारक' का व्यय बढ़ता गया । इस व्यय का भार उनके दोनों पुत्रों पर पड़ा । कहां तो एक सफल, समृद्ध पिता के पुत्र होने के नाते उन्हें लाखों रुपयों की सम्पत्ति मिलती और कहां वे जीवन के प्रारम्भ में ही कर्जदार हो गए । दूसरों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए दर-दर भटकनेवाला स्वयं ऋणी बन गया और इस ऋण को उतारने के लिए उसने कभी भिक्षा नहीं मांगी।

अपने पत्रों में वे हरिश्चन्द्र और इन्द्र दोनों से ऋण उतारने का आग्रह करते रहते थे। इस प्रकार के एक पत्र के कुछ अंश इस प्रकार है—

मेरे प्यारे हरिश्चन्द्र,

कल इन्द्र को पत्र लिख चुका हूं। आज मैंने कार्यालय से पता किया, तो ज्ञात हुआ कि 'प्रचारक' के नाम इन्द्र के हिसाब में 3,495) ।।। उसके नाम खड़े हैं। मेरे पास कुछ बचे हुए रुपये थे, इसलिए 146) ।।। आज दे दिए। अब 3,350) और देने रहे। शायद 100) मैं और दे सकूंगा। क्या तुम 250 नहीं भेज सकते, जिससे 3000) ही बाकी रह जाएं।

तुम्हारा सन्तुष्ट पिता,
मुंशीराम

अल्पसंख्यक का तुष्टीकरण न हो :

—राकेशरानी जी

सबलगढ़ (मुरैना)। यहां 13 नवम्बर को हिन्दू सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रकट करते हुए दयानन्द संस्थान और अखिल भारतीय हिन्दू समिति की अध्यक्षा पंडित राकेशरानी जी ने कहा कि सभी राजनैतिक दल वोटों की खातिर अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के साथ देश द्रोही तत्वों के पक्षापोषण में लगे हैं। कुछ तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिजीवियों को रामायण सीरियल के दूर-दर्शन पर दिखाये जाने पर भी एतराज है। वोटों की राजनीति ने देश में ऐसा वातावरण बना दिया है कि अब तो हिन्दू समाज के समस्त मानदंडो, प्रतीकों और परम्पराओं पर सड़क से लेकर संसद तक में प्रहार होने लगे हैं। इस सबके बावजूद हिन्दू चुप हैं। यदि हिन्दू अब भी न चेते और उन्होंने राजनैतिक दलों के इस हिन्दू विरोधी रुख को चुनौती न दी तो देश को ही नहीं, अपितु सारे संसार को इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा।

इस अवसर पर दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समिति द्वारा प्रकाशित साहित्य उपलब्ध था, जिसे जनता ने हाथों हाथ लिया और बहुत सराहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२० दिसम्बर को पुण्यतिथि के अवसर पर

'भारत' का शैशव

—सत्यपाल शास्त्री

लेखक स्वर्गीय पंडित भारतेन्द्रनाथ जी के सहपाठी और वर्षों निकट सहयोगी रहे हैं। इससे पूर्व भी आप उनकी लेखनी से पंडित जी के यशस्वी जीवन के सम्बन्ध में अनेक लेख पढ़ चुके हैं।

१४ अप्रैल १९३४। हां, यही तो था वह दिन, जब मैं ने शिशु भारतेन्द्रनाथ जी को पहलेपहल देखा। गुरुकुल जेहलम का वार्षिकोत्सव एक दिन पूर्व समाप्त हुआ था। मुझे उसी वर्ष पिता जी विद्यार्थी के रूप में प्रविष्ट कराने वहां ले गये थे। जिस दिन की मैं बात कर रहा हूँ, उस दिन उत्सव की समाप्ति के कारण छुट्टी का मूड था और शिशु 'भारत' को मैं ने उनकी माता विद्यावतीजी शारदा के साथ खड़ा देखा था। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता (बाद में आचार्य) रामदेव जी भिक्षु भी उपस्थित थे। अखाड़े में विद्यार्थियों की कुश्तियां हो रही थीं। मेरी कुश्ती 'भारत' के साथ ही हुई। उसके बाद मैं ने अक्तूबर १९४२ तक भारत को तो कभी नहीं देखा, किन्तु उनकी माता जी अवश्य गुरुकुल में आती रहती थीं। माता जी से अक्सर बातचीत होती रहती थी। एक बार उन्होंने हमारे मुख्याध्यापक शिवकुमार जी शास्त्री से पढ़ने के लिए मेरी निबन्ध की कापी भी मांगी थी।

माता जी देश के काम के लिए घूमती-फिरती रहती थीं। परिणाम यह हुआ कि जैसे जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुत्री इन्दिरा गांधी को अनेक विद्यालयों में शिक्षा दिलवाई, वैसे ही माता जी ने 'भारत' को अनेक विद्यालयों में शिक्षा दिलवाई। 'भारत' कनखल, बड़ौदा, बीघापुर (जिला उन्नाव) और टोपरी (जिला सहारनपुर) के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते रहे। माता जी ने एक बार मुझे 'भारत' की शिक्षा के सम्बन्ध में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बताया था कि "मेरे 'भारत' को अनेक महापुरुषों की जीवनियां जुबानी याद हैं।"

अक्तूबर १९४२ में जब भारतेन्द्र जी गुरुकुल में प्रविष्ट होने आये, तब उनका ट्रंक सरस्वती, माधुरी, कोकिल आदि पत्रिकाओं से ठसाठस भरा था। गुरुकुल में प्रति रविवार दोपहर बाद विद्योल्लासिनी सभा की बैठकें हुआ करती थीं। भारतेन्द्र जी उन बैठकों में राष्ट्रीयता से ओतप्रोत कवितायें सुनाया करते थे। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये। एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आये,' सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'प्रण और प्राण की बाजी का लगा हुआ है फेरा, उतरेंगी तेरी कड़ियां या उतरेगा सिर मेरा' और माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर तू देना फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक' आदि कविताओं का पाठ वे उत्साहपूर्ण मुद्रा में किया करते थे।

प्रस्तुत रचना का विषय केवल भारतेन्द्र जी का शैशव है। जिस उल्लेखनीय तथ्य को दर्शाने के लिए यह रचना लेखनीबद्ध की जा रही है, वह यह है कि 'भारत' के माता-पिता ने पुत्र में अच्छे से अच्छे संस्कार डाले। वे 'भारत' को ऋषिकुमार बनाना चाहते थे। नीचे हम दो पत्र उद्धृत कर रहे हैं, जो माता विद्यावती जी शारदा की डायरी में से मिले हैं। पहला पत्र 'भारत' की प्रथम वर्षगांठ पर 'भारत' को ही सम्बोधित करके लिखा गया है। यह बिल्कुल वैसी ही बात है, जैसी महाभारत में उल्लिखित है कि अभिमन्यु जब अपनी माता सुभद्रा के गर्भ में ही थे, तभी अर्जुन ने उन्हें चक्रव्यूह भेद करने की शिक्षा दी थी। दूसरा पत्र माता जी ने उस दिन लिखा, जिस दिन उन्होंने 'भारत' को गुरुकुल जेहलम में प्रविष्ट कराया। उस समय 'भारत' की उम्र केवल पांच वर्ष और सवा पांच महीने थी। महर्षि दयानन्द ने गुरुकुल प्रवेश के लिए ८-९ वर्ष की उम्र निर्धारित की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। 'भारत' की उम्र तो इससे भी चार वर्ष कम थी, जब वे गुरुकुल में प्रविष्ट कराये गये। इसी से हमारे पाठक अनुमान लगालें कि उनके माता-पिता के मन में अपने पुत्र को ऋषिकुमार बनाने की भावना कितनी बलवती थी।

अब आप पढ़िये, वे पत्र—

(१)

गुरुकुल पोठोहार
डाकखाना चोहाभक्तां जिला रावलपिण्डी
चैत्र कृष्णाअष्टमी संवत् १९८५

मेरे परम प्यारे चिरंजीव पुत्र भारतेन्द्रनाथ जी, अनेकानेक स्वस्तिवाद। आज तुम्हारी पहली ही जन्मतिथि है। यद्यपि इस वर्षगांठ पर या जन्मदिवस पर मैं दुःखी हूँ, शोकातुर हूँ, क्योंकि आज न मैं अपने घर में हूं और न ही तुम्हारे पूज्य पिता जी हम लोगों के समीप हैं। वे तारीख ३ अगस्त १९२८ से बीमार होकर रोगशय्या पर पड़े हैं। तुम्हारे छोटे होने के कारण भुवाली सैनेटोरियम के डाक्टरों ने मुझे उनके पास रहने से रोक दिया है। तुम्हें अकेला किसके पास छोड़ देती, जो मैं उनकी सेवा के लिए उनके पास रहती। बस, तुम्हारे जीवन की कल्याण कामना से ही उनकी आज्ञा से तारीख १६ मार्च को तुम्हें लेकर यहां आई हूँ। परन्तु मुझे इस बात का हार्दिक शोक है कि इस बीमारी में उनके पास रह कर मैं उनकी सेवा न कर सकूँगी। खैर, एक बार तुम्हारे कल्याण थ सात महीने की उम्र में ही कर्तव्य पालन के लिए हृदय पर पत्थर रखकर मैंने तुम्हें अपनी माता जी के साथ टोपरी भेज दिया था। शायद तुम मुझे पाषणहृदया समझ बैठो। परन्तु मैं तुम्हें यह बतला देना चाहती हूँ कि कर्तव्य पालन अत्यन्त ही कठिन है। यद्यपि मुझ तुम्हारे पृथक् होने की अत्यन्त वेदना होती थी, परन्तु कानपुर में तुम्हारे पिताजी के चिकित्सक मेजर वर्क ने तुम्हें रोग से मुक्त रखने के लिए तुम्हें पृथक् रखने की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्मति दी थी। इसीलिए हृदय पर पत्थर रखकर तुम्हारे लिए मैं ने अपनी चाह पर विजय पाई थी। परन्तु मुझ से पृथक् होने पर २-३ दिन में जब मैं ने तुम्हें सहारनपुर हमारे घर में आकर लिया तो तुम अत्यन्त ही दुबले, अस्वस्थ और मरे हुए—से हो गये थे। बस, मेरा हृदय रो उठा था। परमात्मा ने ही पुनः शीघ्र तुम्हें स्वस्थ-सुन्दर बनाकर मुझे अर्पित कर दिया था। बस, वही दशा याद कर मैं इस बार तुम्हें किन्हीं दूसरों के पास न छोड़ सकी। मैं तुम्हारे पिता के प्रति अपने कर्तव्य को भूली नहीं हूँ। उनका सब प्रबन्ध कर दिया गया है। वे पहले की अपेक्षा स्वस्थ भी हैं। इसीलिए इस बार तुम्हारी ओर विशेष ध्यान देना पड़ा। प्यारे पुत्र, सांसारिक दृष्टि से तुम्हारे जन्मदिन से ही मुझे बहुत विपत्तियां उठानी पड़ी हैं। आज तुम्हारा जन्मदिन भी एक जंगल में अपने आत्मीय बन्धुओं से दूर मनाया जा रहा है, परन्तु तुम्हें यह कभी विस्मरण न करना चाहिये कि संस्कारों की दृष्टि से यह सब शुभ ही हो रहा है। जितने होनहार जीवन होते हैं उन पर स्वाभाविक ही विपत्तियां आती हैं। आपत्तियां होनहार जीवन बतलाने की द्योतक हैं। जो दृढ़ता और धैर्य से इन्हें पार कर जाता है वही सच्चा वीर बनकर संसार के सामने उच्च आदर्श छोड़ जाता है। आज जिस संस्था में तुम खेल रहे हो, वह एक ऐसे संन्यासी द्वारा संस्थापित है, जो कभी आपत्तियों से घबराकर क्षणभर के लिए भी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। पूज्यपाद स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती कितने दृढ़ ईश्वरविश्वासी थे, यह मैं तुम्हें क्या बतलाऊँ? भूखों मरने के इस जमाने में उनकी अनेक निःशुल्क संस्थायें ईश्वरविश्वास पर ही चल रही हैं। वे उद्यमी थे, योगी थे, साहसी और उत्साही थे। ईश्वर सदा उनकी रक्षा करता रहा। अपने उद्देश्य की पूर्ति में उन्होंने सदैव अपने विरोधियों को भी साथ लेकर चलने का प्रयत्न किया। उन्होंने मानापमान की तो कभी चिन्ता ही न की।

यह परम सौभाग्य है कि ब्रह्मचारी मंडल में और विद्वज्जन समूह में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक त्यागी संन्यासी द्वारा संस्थापित पुण्यभूमि में ऋषि दयानन्द सरीखे महात्माओं के सिद्धान्तानुयायियों के मध्य में तुम्हारी पहली वर्षगांठ हो। अभी से तुम्हारे जीवन को ब्रह्मचर्य की शिक्षा मिलनी चाहिये। यद्यपि मैं बहुत दुःखी हूँ, असहाय दशा में हूँ, परन्तु प्यारे भारतेन्द्र, मेरा हार्दिक आशीर्वाद और शुभ मंगल कामनायें तुम्हारे जीवन के लिए रोम-रोम से निकल रही हैं। इस संसार के स्वामी, रक्षक और नियन्ता जगदीश्वर से प्रार्थना है कि वह तुम्हें शत वर्ष पर्यन्त यशस्वी और तपस्वी जीवन प्रदान करे। तुम्हारे ऐसे-ऐसे सौ जन्मदिवस भारतवर्ष और सारा संसार मिल कर मनाये। तुम मेरी ही अमूल्य सम्पत्ति न बनकर अपने प्यारे देश की बहुमूल्य सम्पत्ति बनो, यही मेरी हार्दिक इच्छा और मंगल कामना है। तुम्हारे लिए यदि मैं कोई आदेश देना चाहती हूँ तो यही कि सदैव ईश्वर-भक्त बन कर मन, वचन और कर्म से अपने चरित्र की रक्षा करते हुए देशोपकारी, लोकोपकारी और समाजोपकारी कार्यों में जीवन को लगाते हुए मेरी और अपने पिता की अन्तरात्मा को शान्ति प्रदान करना। तुम्हारी गणना उत्साही, साहसी और आदर्श वीरों में हो। मैं चाहती हूँ कि तुम विद्वान् और धर्मात्मा बन कर लोकप्रिय बनो। मेरी हार्दिक इच्छा है कि सब प्रकार की शक्ति संचित करके भी अपने स्वत्वों की रक्षा करते हुए दूसरों के अधिकारों की न्यायपूर्वक रक्षा करो। मेरी मंगल कामना है कि तुम सदैव दीन-दुःखियों के सहायक बनना और शक्तिशाली से शक्तिशाली व्यक्ति के भी अन्याय का विरोध करने में पीछे न हटना।

प्यारे बच्चे, छल, दम्भ, प्रपंच, विश्वासघात, मिथ्याचरण और देश-द्रोहिता के दुर्गुणों से सदा अपनी रक्षा करना। कठिन से कठिन समय पर हिम्मत न हारना। मैं ने स्त्री होकर भी सदैव आपत्तियों का सामना किया है। तुम मेरे ही पुत्र हो। मेरे वंश की कीर्ति की रक्षा करना। सब भांति मातृभूमि के गौरव की रक्षा करना। कल्याणकारी भगवान् तुम्हें आभा और प्रतिभा प्रदान करके चिरंजीव बनाये। मंगलमय भगवान् से यही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रार्थना करती हुई यह पत्र समाप्त करती हूं। इन बातों पर अमल करना। इसी से सुखी और शान्त रह सकोगे। अपने पितृस्थान बीवापुर (जिला उन्नाव) में भी जाकर हमारी स्मृति के लिए अपना जन्मदिन मनाया करना। भूलना मत और अपनी ननसाल टोपरी (जिला सहारनपुर) में कभी-कभी जाकर उस उद्धत मंडल को शिक्षा प्रदान कर दिया करना।

शुभचिन्तिका चिन्तातुर दुःखी
तुम्हारी प्यारी अम्मा
विद्यावती शारदा शुक्ल

(२)

डलहौजी
२०-८-१९३३

मेरे प्राण प्यारे चिरंजीव आज्ञाकारी पुत्र भारतेन्द्रनाथ जी, अनेकानेक स्वस्तिवाद।

आज मैं ने हृदय पर पत्थर रखकर तुम्हें अध्ययनार्थ गुरुकुल भेज दिया है। पुत्र, तुम्हारा वियोग मेरे लिए कितना असह्य है, यह मैं कैसे बताऊं? अभी तुम बच्चे हो। मेरी अवस्था को न समझ सकोगे। किन्तु तुम बड़े होने पर भलीभाँति समझ सकोगे कि मेरी पूज्या जननी को तुम्हारे लिए किन-किन विरोधों का सामना करना पड़ा था और कैसी कठिन-कठोर यातनाओं को झेलकर उन्होंने हमें संसार के सम्मुख मस्तक ऊँचा करने के योग्य बनाया है। प्यारे पुत्र, डलहौजी आते समय मैं तुम्हारी भगिनी को तुम्हारी नानी के पास इसलिए छोड़ आई थी कि मैं अकेली पाठशाला का कार्य और तुम्हारी जिम्मेदारी न उठा सकूँगी, क्योंकि अपने विश्वासपात्र पुत्र समान भृत्य केशव को भी मैं तुम्हारे भावी जीवन की कल्याणकामना के लिए तुम्हारे घर बीवापुर की देखरेख के लिए छोड़ आई थी। यहां बर्फ में वसुन्धरा के बीमार होने का भी भय था। परन्तु मेरी हार्दिक इच्छा थी कि केशव वसुन्धरा को लेकर ग्रीष्म ऋतु में यहां आ जाये। किन्तु वह घर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में कार्याधिक्य के कारण न आ सका और इस प्रकार यह सीजन अतिकष्ट से व्यतीत किया। मैंने तुम्हारी नानी को कई तार दिये, कई खत भी लिख, परन्तु पुत्री को लेकर वह भी यहां तक न आई।

मेरे प्यारे बच्चे, जानते हो तुम किस पिता के पुत्र हो? जिसने मृत्युपर्यन्त चापलूस समाज का मुंह तोड़ा है। जिसने आजीवन न्याय और दीन रक्षा के हित अपने स्वत्वों की बलि दी है। जिसने सदैव ही दुरभिमानी जनों के अहंकार को अपनी शक्तियों से कुचला है। प्यारे, मुझे आशा है कि उसी वीर पिता के पुत्र होकर तुम उन्हीं की भांति सिद्धान्तों के लिए मर मिटने वाले साबित होगे। जानते हो तुम किस माता की कोख से पैदा हुए हो? जिसने कठोर से कठोर आपत्तियों का सामना करते हुए भी न्याय को नहीं बेचा। जानते हो, तुम किस मां के बेटे हो? जिसने न्याय रक्षा के लिए—आत्मगौरव के लिए सदैव सुखों को ठोकरों से ठुकराया है। मेरे पुत्र, यहां से जाने पर चाहे मेरी कैसी भी हालत हो जाये मैं उसे शान्ति और धैर्य से सहन करूंगी। मैं उसे गर्व और फख्र के साथ झेलूंगी।

तुम्हारे होनहार लक्षणों को देखकर मेरा हृदय आशाओं से परिपूर्ण हो जाता है। मेरा हृदय सौभाग्य से उछल पड़ता है। समय आयेगा, जब मैं तुम्हारे जैसे सुपुत्र से सुपुत्रवती कहला सकूंगी। आज मैंने इसी आशा और उम्मीद से तुम्हें भेजा है। परम कृपालु भगवान् अपनी करुणा का हाथ सदैव बनाये रखें। उस प्रभु के आशीर्वाद से तुम यशस्वी, मेधावी, बलशाली और धनशाली बन सको। आज संसार में तुम्हारे बिना मेरा कौन है? तुम्हीं मेरी आशाओं के एकमात्र आधार हो। मेरे दूध और पितृ-वंश की लज्जा की रक्षा करना। प्रभु तुम्हें चिरायु करे! बस, इस आशीर्वाद के साथ पत्र समाप्त करती हूं।

तुम्हारी शुभचिन्तिका प्यारी मां
विद्यावती शारदा, हैड मिस्ट्रैस
आर्यकन्या पाठशाला सदर बाजार, डलहौजी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'भारत' की माता कवयित्री भी थीं

स्वर्गीय पंडित भारतेन्द्रनाथ जी की माता पंडिता विद्यावती जी शारदा शिक्षिका और क्रान्तिकारिणी होने के साथ ही बहुत अच्छी कवयित्री भी थीं। नीचे उनकी कुछ कवितायें दी जा रही हैं—

तुम्हारा प्यार

देखा शैलराज को तपस्वी-सा अटल और
सागर को लखी विस्तृत गम्भीरता अपार।
देखी मेदिनी की है सहनशक्ति भी अदम्य
देखती हूँ नित्य आसमान का सुविस्तार।
देखा है प्रतिज्ञा को कठोर से कठोर और
गंगा-युमना की देखी तरल पवित्र धार।
जल थल अनिल अनल देख डाले किन्तु
पाई उपमा न प्रिय, कैसा है तुम्हारा प्यार।१।
मेरे जाने चन्द्रमा से अधिक सुशीतल है
विष्णु से अधिक क्षमाशील दिखलाता है।
वंशी की सुरीली तान से भी है मधुर और
ईश्वर से अधिक महान् दर्शाता है।
दीपक-सा दीप्तिमान् हीरक-सा ज्योतिमान्
तेजवान् सूर्य-सा प्रकाश छिटकाता है।
वीर योगियों-सा है वियोगियों-सा है अधीर
अकथ गम्भीर वह प्यार कहलाता है।२।

पतंगे के प्रति

उसमें भरी मोहिनी शक्ति है क्या, जिसको लख हो सुख पाते कहो।
उसके उस ज्वालामुखी तन को, किस लालच से लपटाते कहो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किस भाँति की ज्वालामुखी में फँसे, तुम कौन-सा हो सुख पाते कहो।
पड़ के किस चाह की आह में यों, अपने तुम प्राण गंवाते कहो ॥१॥

उस निष्ठुर दीपक देवता से, वरदान की आशा लगाना बुरा।
करते हो उपासना खूब करो, पर चौगुना चाव चढ़ाना बुरा।
उससे न मिलेगा तुम्हें कुछ भी, भ्रम में मनको उलझाना बुरा।
सुख साथ है जीवन के जग में, जल के कहीं प्राण गंवाना बुरा ॥२॥

तुम को कर भस्म समूल पतंग ! वह दीपक तो जलता ही रहा।
परवाह न प्रीति की की उसने, वह नित्य तुम्हें खलता ही रहा।
अपने विष से भरी सुन्दरता को, दिखा तुम को छलता ही रहा।
तुमने किया प्रेम और प्राण दिये, उसका क्रम तो चलता ही रहा ॥३॥

उलाहना

सरिता मरुभूमि ही हो निकली, तब ओस की प्यास बुझाने से क्या ?
जब प्राण पपीहा ने दे ही दिये, तब स्वाति सुधा बरसाने से क्या ?
सर्वस्व लुटाया चकोर ने तो, उसे दूर से यों तरसाने से क्या ?
जब नेह का नाता निभाया नहीं, तब प्रेम की रागिनी गाने से क्या ?

मधु पुष्प की चाह में पागल हो, उन कंटकोंको अपनाया तो क्या ?
कहो शुक्ति की खोज में कौड़ी मिली, जो समुद्र में गोता लगाया तो क्या ?
वह कंचन खोकर आज अरे, पछताकर कांच कमाया तो क्या ?
विष दे चुकने पर प्रेयसि हा, यदि अमृत घूंट पिलाया तो क्या ?

जब निष्ठुर नाम धरा हो चुके, तब प्रेम के प्यासे कहाये तो क्या ?
यह मानव कुंज उजाड़ के हा, जब बीज सनेह के लाये तो क्या ?
अब प्रस्तर मूर्ति को नाहक ही, भला प्रेम के मन्त्र सुनाये तो क्या ?
पहले ठुकराकर सोचो सखे, अब बाद को चाहने आये तो क्या ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाई भारतेन्द्रनाथ जी की याद

—रामकृष्ण 'भारती'

प्रस्तुत लेख के लेखक एक स्वर्गीय भारतेन्द्रनाथ जी के अभिन्नहृदय मित्र के नाते उनके घनिष्ठ सम्पर्क में रहे। लेखक ने उनके यशस्वी जीवन पर एक विहंगम दृष्टि डाली है।

प्रिय भाई भारतेन्द्रनाथ जी को मैं लगभग बीस वर्ष से जानता था। इस से पूर्व भी उन की प्रगतियों से मैं निरन्तर परिचय प्राप्त करता रहा। सन् १९५१ में जब में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सप्ताहिक मुख-पत्र आर्य के सम्पादक थे, तब मैं उनके सम्पादकीय रुचिपूर्वक पढ़ता था। उन्हीं दिनों श्रीमती राकेशरानी जी के भी लेख और कविताएं प्रकाशित होनी आरंभ हो गई थीं। आर्यमित्र लखनऊ में कार्य करते हुए जब श्री भारतेन्द्रनाथ जी के उत्साह से आर्यमित्र दैनिक रूप से निकला तब भी मैंने उनकी सम्पादन कला प्राप्त का परिचय प्राप्त किया। पंजाब, उत्तर-प्रदेश दिल्ली आदि में उनके कार्यों का उल्लेख करना इस छोटे-से लेख में सम्भव नहीं। उस समय के आर्यसमाज के समाचारपत्रों से उनके लेख; सम्पादकीय, कविताएँ आदि प्राप्त किए जा सकते हैं। छोटी उम्र से ही उनके माता पिता ने उन में जो अच्छे संस्कार भरे थे, वही उनके निर्माण के स्थायी आधार बने। गुरुकुल जेहलम में उनकी जो शिक्षा-दीक्षा हुई, वही आगे चल कर उनके सार्वजनिक जीवन में प्रकट हुई। १९६६-६७ के लगभग मैं उन्हें आर्यसमाज पंजाबी बाग के वार्षिकोत्सव में पर ले गया। वे लेखक और कवि तो थे ही, साथ ही वे बहुत प्रभावशाली वक्ता भी थे। उनके भाषणों से जनता बहुत प्रभावित होती थी। मैं उन्हें आर्यसमाज जबलपुर के एक वार्षिकोत्सव में भी ले गया। यह सन् १९७० के आस-पास की बात है। उन दिनों ईसाइयों के दुश्चक्रों के सम्बन्ध में आर्य प्रति-निधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान में उन्होंने काफी ट्रैक्ट प्रकाशित किए थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य प्रतिनिधि सभा से त्यागपत्र देकर उन्होंने जनज्ञान का प्रकाशन आरम्भ किया तथा दयानन्द संस्थान की स्थापना की। उन्होंने चारों वेदों के भाष्य के प्रकाशन की योजना बताई और काफी बाधाएं आने पर भी वे घबराये नहीं और उन्होंने हजारों घरों में वेद भाष्य पहुचाये। उन्होंने पूरी लगन के साथ वेदभाष्य के प्रकाशन का कार्य अपने कुशल हाथों में लिया और दयानन्द संस्थान की ओर से कई ऐसे पुराने ग्रन्थ प्रकाशित किए जो उपलब्ध नहीं थे। आचार्य अभय देव जी के वैदिक विनय, पं. चमूपति जी के 'सोम सरोवर', योगिराजकृष्ण आदि ग्रन्थों के अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, स्वामी जी का जीवन चरित्र, सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद, स्वामी सत्य प्रकाश जी के अंग्रेजी ग्रन्थ, प. चमूपति जी के अंग्रेजी ग्रन्थ आदि प्रकाशित करके आर्यसमाज के प्रकाशक क्षेत्र में हलचल मचा दी। आर्य समाज की स्थापना शताब्दी और सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह पर उन्होंने कई नए प्रकाशन जनता को समर्पित किए। लाखों रुपए का साहित्य प्रसारित किया। आर्य समाज की किसी संस्था ने इतने कम मूल्य पर ऐसा साहित्य प्रकाशित करने का साहस नहीं किया। उनके प्रकाशनों में 'वन्दना के स्वर' के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसके सम्पादक श्री क्षेमचन्द्र सुमन थे। यह ग्रन्थ सार्वदेशिक सभा के कहने पर तैयार किया गया पर सभा उसे प्रकाशित न कर सकी।

श्री भारतेन्द्रनाथ जी का व्यक्तित्व निराला था। वे धुन के पक्के थे और एक बार जब वे कोई योजना बना लेते थे, तब उसमें पूर्ण रूप से जुट जाते थे। वे अकेले ही नहीं जुट जाते थे, अपने साथ परिवार के एक-एक सदस्य को भी लगा देते थे। अपने साथ उन्होंने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती राकेशरानी को जोड़ा, अपनी पुत्रियों को जोड़ा, अपने जामाताओं को जोड़ा मुझे स्मरण है जब उन्होंने सूर्य नगर शाहदरा में मकान लिया। मुझे स्मरण है जब उन्होंने किंग्जवे कैम्प से चार पांच मील दूर बुराड़ी कस्बे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के समीप इब्राहीमपुर में वेद मन्दिर के लिए भूमि का क्रय किया। वे योजना बनाने में बहुत रुचि लेते थे और निश्चय करने के बाद योजना को कार्यान्वित करने में जी-जान से जुट जाते थे। महात्मा आनन्द स्वामी जी के आशीर्वाद से उन्होंने प्रकाशन का जो कार्य आरम्भ किया वह कार्य वे अपने जीवन भर बढ़ाते रहे। जनज्ञान हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी छापा। कुछ वर्ष उन्होंने जनज्ञान का मराठी संस्करण भी प्रकाशित किया। वे जनज्ञान की सामग्री का स्वयं चयन करते, स्वयं सम्पादित करते और प्रूफ तक देखते। वे जन्म जात कवि थे, लेखक थे, सम्पादक थे। कुशल और प्रभावशाली वक्ता थे। उनके घर में कई बार गोष्ठियाँ होतीं। आचार्य दयवीर शास्त्री, प्रोदत्त सिंह प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित, डा. प्रशान्त वेदालकार, पं. दिवानाथ सिद्धांतालंकार, श्रीक्षितीश वेदालंकार, श्रीबनारसी सिंह और डा. परमानन्द जैसे हितैषी भी इन गोष्ठियों में सम्मिलित होते। खाने-खिलाने का उन्हें शौक था। History of the Assassins पुस्तक के प्रकाशन की एक कथा है। मेरे पुस्तकालय में किसी दिन वह पुस्तक मिली और मैं उसे उनके पास लेगया। वह पुस्तक मुझे वापिस नहीं मिली। उसके स्थान पर मुझे उस पुस्तक का नया संस्करण ही प्राप्त हो सका। उन्हें अच्छे कार्यकर्ताओं की तलाश रहती थी। श्री बालेश्वर अग्रवाल जैसे —हितैषी उन्हें मिले। मुझे वे दिन याद हैं जब १९७५ ई. के मध्य में आपात कालीन स्थिति की घोषणा हुई। जय प्रकाश नारायण के आन्दोलन का भी मुझे स्मरण है। जनता शासन और चुनावों की धूम भी मेरी आंखों के सामने है। हम कुछ मित्र उन दिनों चुनाव सम्बन्धी सभाओं में जाते तथा नेताओं के विचारों को सुनते। बाबू जगजीवन राम तथा प्रो. शेरसिंह से उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। श्री शिवकुमार शास्त्री आचार्य भगवान् देव और स्वामी ओमानन्द जी भी उनके सहयोगी थे। वैदिक समपत्ति जैसी पुस्तकों के प्रकाशन का उल्लेखनीय स्थान है। श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, सरस्वतीन्द्रजीवन, सामवेद का आध्यात्मिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाष्य, वेद ज्योति, यज्ञ मीमांसा, Concept of God संक्षिप्त महाभारत, वैदिक गीता आदि ग्रन्थ उन्होंने प्रकाशित किए। ईसाइ विरोधी तथा इस्लाम विरोधी ट्रैक्ट भी उन्होंने छपवाए। हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य भी उनके तत्त्वावधान में छपा और अपने जीवन काल के कुछ वर्ष उन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए भी समर्पित किए। इस्लाम विरोधी कुछ लेखों के लिए जनज्ञान के विरुद्ध काफी मुकद्दमे भी श्री भारतेन्द्र जी के जीवन काल से ही चल रहे हैं। अकेली जान, उलझनें तथा समस्याएँ अनेक पर भारतेन्द्र जी जीवन में कभी घबराये नहीं। वेद मन्दिर का निर्माण कराया। अभी मन्दिर का कार्य बीच में ही था कि वे शहीद हो गए। अस्वस्थ तो वे कई वर्षों से थे। वे कार्यकर्ताओं का आदर करना जानते थे। श्री सत्यपाल शास्त्री उनके साथ ही गुरुकुल जहेलम में पढ़ते थे। जितना सम्पर्क भारतेन्द्र नाथ जी से उनका रहा है, उतना अन्य किसी का शायद ही रहा हो। गत पन्द्रह-बीस वर्ष से वे सब कामों में संस्थान को सहयोग दे रहे हैं। उन्हें सूर्य नगर का अपना मकान बेचना पड़ा। वे वेद मन्दिर में स्थायी रूप से रहने की योजना बना रहे थे। कुछ दिन वे वहाँ रहे भी पर स्थायी रूप से नहीं रह सके। कुछ वर्ष पूर्व उनके जीवन काल में ही वेद मन्दिर में एकाएक बाढ़ आ जाने से दयानन्द संस्थान को काफी हानि उठानी पड़ी थी, पर भारतेन्द्र नाथ जी जीवन में ऐसी परीक्षाओं के आदी हो चुके थे। उन्होंने मेरे 'आर्यमिविनय' के गीतानुवाद का प्रकाशन किया। हमारे जीवन काल में कुछ अवसर तो ऐसे आए जब हमारी भेंट उनसे प्रायः प्रतिदिन हो जाती थी। वे मित्रों के मित्र और यारों के यार थे। वे वसिष्ठ, विश्वामित्र और परशुराम इन तीनों का व्यक्तित्व अपने में कर जाए हुए थे। वे वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर चुके थे। सचमुच उन्होंने अपने आप को होम दिया। यदि वे अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख पाते, तो संभवतः वे कुछ वर्ष और अपनी सेवा साधना जारी रखते पर भगवान् को यह स्वीकार नहीं था। अभी उनकी हम सब को और भी आवश्यकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियाँ

निम्नलिखित दानदाताओं ने दयानन्द संस्थान के धर्म प्रचार यज्ञ में ग्यारह-ग्यारह रुपये भेजे हैं। मैं इन सबको हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

—राकेशरानी
अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली

[क]

सर्व श्री १. ओम् प्रकाश कोड़िया-दिल्ली २. राजेश ट्रेडिंग कम्पनी-कलकत्ता, ३. माँगी लाल शर्मा-जयपुर ४. चन्द्रिका प्रसाद-सिंहभूमि ५. पं. ना. प्र. देवलिया-भोपाल ६. ज्ञान चन्द्र लिपिक-एटा ७. शत्रुघ्न सिंह परिहार-हमीरपुर ८. मै. राम कुमार लक्ष्मीनारायण-इन्दौर, ९. हरि-मोहन एडवोकेट-मिर्जापुर १०. कुँवर चन्द्र-फरीदकोट ११. बद्रीलाल गुप्त-बूंदी, १२. वेद प्रकाश सेठ-दिल्ली १३. ठाकुर दास जी-अमृतसर १४. मन्त्री, आर्य समाज-चित्तौड़गढ़ १५. पवीपश्मया-विचकुन्डा १६. विनोद बुक डिपो-राजहरा १७. कावले नाम देव-बीदर १८. रामेश्वर लाल सुकार-भीमवाड़ा १९. नारायण मदन गोपाल-मुजफ्फरनगर २०. रामसरन आर्य-सादाबाद २१. रामदास केसरी-गया २२. सच्चिदानन्द सिंह-सीवान २३. लाला राम गोपाल-मुरादाबाद २४. जवाहर लाल सुभाष चन्द्र-

---

थी। वे होते तो उनका कार्य और भी तेजी से आगे बढ़ता। भगवान् की कृपा है कि वे अपने जीवन काल में अपनी चार पुत्रियों का विवाह कर गए। पांचवीं पुत्री अभी पढ़ रही हैं। भरा पूरा परिवार है। श्रीमती राकेश रानी जी अकेली पड़ गई हैं। उन पर अनेकों मुकद्दमे चल रहे हैं। भारतेन्द्रनाथ जी मर कर भी अमर हैं। जिन्दा शहीद हैं। उन्हें हमारी प्रणामाञ्जलि समर्पित है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लखनऊ २५. रामचन्द्र-अहमदाबाद २६. रमेशचन्द्र प्रकाश चन्द्र-कानपुर २७. विश्वमित्र-दिल्ली २८. कान्ति भाई सोमदत्त पटेल-मेहसाणा २९. रामचन्द्र प्रसाद सर्राफ-समस्तीपुर ३०. पुरुषोत्तम दुबे-भानपुर ३१. अतर सिंह आर्य—मुजफ्फर नगर ३२. हरि सिंह ठाकुर-सिहोर ३३. मेजर दाता रामसिंह-दिल्ली ३४. डा. कुँवर यादव-बदायूं ३५. आर्य समाज रावत भाटा-कोटा ३६. रहीश-अहमदाबाद ३७. नाथू राम राम नारायण-दिल्ली ३८. मण्डलेश्वर शर्मा-मेरठ ३९. काली शंकर अवस्थी-कानपुर ४०. बी. डी. मिश्र-लार जी बीना ४१. ओम् प्रकाश शर्मा-दिल्ली ४२. भानु प्रताप सिंह-जालौन ४३. जी. एल. निगम-कानपुर ४४. राजपाल कपूर-बम्बई ४५. हरचरणसिंह अटल-अलीगढ़ ४६. बजरंग लाल अग्रवाल-भवानी पटना ४७. भूमध्या गंगाराम येल्दी-पुणे ४८. शिव नारायण यादव-लखनऊ ४९. रामचन्द्र पुरोहित-पाली ५०. मुरली मनोहर उपाध्याय-छार ५१. रामपुकार सिंह-गोपालगंज ५२. अशोक कुमार-इन्दौर ५३. मंत्री आर्य समाज-इटावा ५४. राम बालक सिंह-जौनपुर ५५. तुलसीदास पूनम चन्द्र त्रिवेदी-छजेरा ५६. एच. सी. दुबे-नाडियाड ५७. बी. पी. पटेल-कटनी ५८. अर्जुन सिंह-मुंगेर ५९. मुन्शी राम भाटिया-भिवानी ६०. वेदपाल-करनाल ६१. प्रेम नारायण खुराना-झाँसी ६२. गोपाल कृष्ण गुप्त-मुरैना ६३. रामा आयरन स्टोर-मेरठ ६४. सुरेश चन्द्र-सुसवेर ६५. एस. एन. वर्मा-कानपुर ६६. मोहन लाल जी गोपाल-रायसिंह नगर ६७. अनिल कुमार गुप्त बलांगीर ६८. राधेश्याम भगत-साहिबगंज ६९. लक्ष्मण सिंह चौहान-मैनपुरी ७०. जानकी दास नरूला-कलकत्ता ७१. कमला प्रसाद वानप्रस्थी-इलाहाबाद ७२. विजय-लक्ष्मी-धनबाद ७३. आर्य समाज मड़ावदा-उज्जैन।

[ख]

१. भगवती देवी-देहरादून २. आर. पी. तिवारी-गुना ३. जयवंसिंह उमाशंकर-धौलपुर ४. डा. पन्ना लाल वार्ष्णेय-बुलन्दशहर ५. आर्य समाज शिकरण अलीगढ़ ६ दार्शनेय लोकेश-मुरादाबाद ७. के. एल. चित्रा-नई-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिल्ली ८. राम औतार गुप्त-अलाहगंज ९. लादूराम जेवलिया-श्रीगंगानगर १०. रमेश चन्द्र गर्ग-लोनी ११. लाल जी श्रीवास्तव-प्रतापगढ़ १२. रविभूषण त्रिपाठी टिहरी गढ़वाल १३. नन्द किशोर सिंह-गोरखपुर १४. वीरसिंह-बीकानेर १५ रामचन्द्र-गोरखपुर १६ रामेश्वर लाल श्रीगंगानगर १७. बलदेव प्रसाद शर्मा-फीरोजपुर छावनी १८. रामसिंह शर्मा-बिजनौर १९. एम. एल. कोतवाल-जम्मू तवी २० भीमचन्द्र आर्य—रायचूर २१. रघुनाथ प्रसाद वैश्य-छपरा २२. गणेश नारायण-बम्बई २३. बैजनाथ-सहाय-इलाहाबाद २४. रामसिंह आर्य-रोहतास २५. कृष्णसिंह-रोहतास २६. आर्य समाज फर्रुखाबाद २७. जयसिंह-खोलापुर २८ रमेश चन्द्र पंवार-सहारनपुर २९. मोती लाल-धनबाद ३०. गे. परकेरिया—झरिया ३१. प्रमोद कुमार-जलपाई गुड़ी ३२ श्रवण कुमार-बम्बई ३३. चण्डी प्रसाद रामदेव—बम्बई ३४. परिणीत कुमार-सम्भल ३५. के. एस. कोहली-जबलपुर ३६. राम लाल बुधोपाटेल-जलगांव ३७. रामकिशोर-बांदा ३८. अखिलेश-कुमार-मेरठ ३९ गौतम सिंह-भिलाई ४०. रामशेरसिंह-उन्नाव ४१. १०१ भंवर सिंह-मुजफ्फरनगर ४२. कौशल्या कुमारी-हरयाणा ४३. कन्हैया पवार-दिल्ली ४४. प्रेम नाथ कपूर-सोनीपत

आप हमें इस प्रकार भी सहयोग दे सकते हैं।

501 रु० भेज कर

जनज्ञान मासिक

के आजीवन सदस्य बनिये।

आप को 101 रु० का अमूल्य ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति और 50 रु. का संक्षिप्त महाभारत (हिन्दी भाष्य) उपहार में दिये जायेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं इन्द्र हूँ

—विक्रमादित्य 'वसन्त'

आत्मबोध होने पर तथा आत्मशक्ति से परिचित होने पर यदि मनुष्य उसका समुचित उपयोग नहीं करता तो यह दोष उसका है, उसकी शक्ति का नहीं। वेदानुसार आत्मा एक इन्दु है। 'इन्दुर्वै बिन्दुर्भवति' यह इन्दु क्या है—एक सूक्ष्मतम बिन्दु, जिसमें चेतना है, जो मानव जीवन के कण-कण में व्याप्त होकर कार्यरत है। यह आत्मेन्दु मानव शरीर के हृदयाकाश में सूर्य की भांति जगमगा रहा है और वहीं से जीवन के प्रत्येक अंग को प्रकाशित और चलायमान कर रहा है। यह इन्दु शरीरस्थ इन्द्रियों के माध्यम से कार्य कर रहा है। यदि इन्द्रियों पर इन्दु का सतत और सर्वतः नियन्त्रण रहता है तो वह इन्दु इन्द्र है। जितेन्द्रियता सम्पन्न इन्दु ही वह इन्द्र है, जिसके लिए की वेद सूक्ति चरितार्थ होती है—'इन्द्रो जयाति न परा जयाता' (अ० ६-६८-१) अर्थात् इन्द्र जिताता है, पराजित नहीं कराता है। 'इन्द्रो बलं, बलपतिः' को जो सार्थक करता है; उस आत्मा का ही यह उद्घोष है—'अहमिन्द्रो न पराजिग्ये' (ऋ० १०-४८-५) अर्थात् मैं इन्द्र हूं, मैं कदापि पराजित नहीं होता हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानव शरीर एक कोशागार है जिसके कोषों का सदुपयोग अथवा दुरुपयोग आत्मा इन्द्रियों के माध्यम से करता है । प्रत्येक मानव शरीर को तीन लोकों में विभक्त किया गया है, जिनमें से प्रत्येक के सात-सात विकासों के लिए अथर्ववेद का आरम्भ जिस वाचस्पति सूक्त से होता है, उसके प्रथम मंत्र में वाचस्पति को आदेश दिया गया है ।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥

अर्थात् तीन लोकों में जो सात-सात रूपों को धारण करते हुए सब ओर गतिमान् हो रहे हैं । वागीश—वाणी का पति वाचस्पति उनके तन्तुओं और बलों को आज मेरे लिए धारण कराये ।

ये तीन लोक हैं, भू, अन्तरिक्ष और द्यौ । नाभि से नीचे का देह प्रदेश भू अर्थात् भोग लोक है । नाभि से ग्रीवा तक का लोक अन्तरिक्ष है और ग्रीवा से मस्तिष्क तक का लोक द्यु लोक है । जिस प्रकार हमारा वास धरती पर है, जिसके ऊपर जगमगाता हुआ द्युलोक है और मध्य में वह अन्तरिक्ष है, जो सकल प्रकाशमान लोकों और पृथिवियों को धारण कर रहा है, उसी भांति मानव शरीर के भी ये तीन लोक हैं, जिनका स्वामी अन्तरिक्षस्थ आत्मा है, जो इन तीन लोकों का अपनी चेतना से सुसंचालन कर रहा है । इन तीन लोकों में जो सात-सात विकास संस्थान हैं, उनकी अनभिज्ञता के कारण जब उनकी यथोचित पुष्टि नहीं होगी, मानव जीवन का सदुपयोग नहीं हो पायेगा ।

मानव जीवन में ज्ञान पहले बाहर से मिलता है, किसी निमित्त से मिलता है, किसी माध्यम से प्राप्त होता है, क्योंकि परमात्मा ने मनुष्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को वह स्वाभाविक ज्ञान नहीं दिया जो अन्य पशुओं और पक्षियों को दिया है। स्वाभाविक ज्ञान से प्रयोजन उस जानकारी से है, जिसके बिना शरीर धारण और संचालन संभव न हो। शरीर की रक्षा और शरीरस्थ इन्द्रियों का बोध स्वाभाविक ज्ञान है। किसी भी पशु-पक्षी को उस के आहार और जीवन यापन के लिए कोई शिक्षा नहीं देनी पड़ती। कुत्ते के नवजात बच्चे को आप जल में उठाकर फेंक दें, वह स्वयं तैरकर बाहर आ जाएगा। मछली के नवजात शिशु को जल में तैरना और पक्षी के बच्चे को आकाश में उड़ना कोई नहीं सिखलाता। मनुष्य के अतिरिक्त किसी भी अन्य जीव को उसके भोजन, शरीर रक्षण तथा संतान उत्पत्ति की कोई शिक्षा नहीं देनी पड़ती क्योंकि परमात्मा ने उन्हें यह स्वाभाविक ज्ञान दे रखा है। यदि मानव के शिशु को बोलना, पढ़ना, लिखना, उठना, बैठना न सिखाया जाए, तो उसका जीवन पशुओं और पक्षियों से भी निकृष्ट हो जाएगा।

पशुओं के इस स्वाभाविक ज्ञान के विषय में जब एक बार एक नास्तिक ने मुझसे यह कहा कि आपके ईश्वर ने बड़ा अन्याय किया कि मनुष्यों को जो सर्वश्रेष्ठ प्राणी है यह स्वाभाविक ज्ञान नहीं दिया पर उसके अतिरिक्त अन्य जल थल और नभचरों को यह दे दिया। मैंने उस नास्तिक से कहा कि यह बात उसकी समझ में आनेवाली नहीं है, क्योंकि इसका सम्बन्ध बुद्धि और तर्क से है, जिस पर उसने ताले लगा रखे हैं। वह नास्तिक उत्तेजित हो गया और कहने लगा कि यदि वह बुद्धिहीन और तर्कविहीन है, तो मैं ही अपनी बुद्धि और तर्क का परिचय दूँ। मैंने विनम्र शब्दों में कहा कि मनुष्य ने तो अपनी बुद्धि से काम लेकर मानव संतति के प्रशिक्षण के लिए ही विद्यालय और शिक्षालय खोल रखे हैं। यदि परमात्मा अन्य जीवों को स्वाभाविक ज्ञान न देता तो क्या बुद्धिजीवी उनके लिए भी प्रशिक्षण केन्द्र बनाता। यदि मानव जीवन केवल भोग तक सीमित होता तो परमात्मा उसे भी स्वाभाविक ज्ञान देता और कर्म करने में स्वतन्त्र न बनाकर परतन्त्र बनाता। यदि मानव को स्वाभाविक ज्ञान प्राप्त हो जाता तो न उसमें कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिज्ञासा होती और न ही वह आत्मोन्नति और भौतिक समृद्धि के लिए कोई प्रयत्न करता। अन्य जीवों की भांति वह केवल अपनी क्षुधा और तृषा को तृप्त करता। पर मानव जीवन तो एक कर्म योनि है, योग योनि है जहां जिज्ञासा वह आत्म तृषा और क्षुधा है जिसके बुझाने के लिए पहले वह बाहर से ज्ञान प्राप्त कर मस्तिष्क का विकास करता है, तदुपरान्त स्वत: अध्ययनशील होकर, अन्तर्मुखी होकर अपना ज्ञान नेत्र खोलता है और भौतिक तथा आध्यात्मिक समृद्धियों को विकसित करता जाता है। चूंकि मनुष्य स्वभाव से ज्ञानी नहीं है इसलिए सृष्टि की उत्पत्ति के समय जो मुक्त आत्माएं मुक्ति की अवधि समाप्त हो जाने पर अमैथुनी रूप से पुन: मानव शरीर धारण करती हैं, उन्हें परमात्मा सर्वज्ञान सम्पन्न बनाता है। उसके पश्चात् ही मानव द्वारा प्रशिक्षण आरम्भ हो जाता है जो इस सृष्टि के प्रलयकाल तक चलता रहता है।

मानव जीवन में इस प्रशिक्षण का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। शिक्षा विहीन व्यक्ति मूर्ख रहता है और शिक्षा सम्पन्न व्यक्ति बुद्धिमान् बनता है। बुद्धि विहीन मूर्ख अनमोल जीवन का दुरुपयोग करता है। इसे विषय वासना भोग-विलास, पाप ताप संताप में जलाकर नष्ट करता है, जब कि बुद्धिमान् व्यक्ति भोगात्मक जीवन से उसका सुनिर्माण करता है। इस संदर्भ में एक दृष्टान्त प्रस्तुत है। बहुत वर्ष पहले जब इस देश में कपड़ा धोनेवाली मशीन उपलब्ध नहीं थी, एक सज्जन जब विदेश से लौटे तो एक मशीन साथ में ले आए और अपनी पत्नी तथा बच्चों को उसके विषय में केवल मौखिक जानकारी दी परन्तु उसके उपयोग की विधि नहीं बतलाई। अगले दिन जब वे किसी कार्यवश घर के बाहर गए तो परिवार के सदस्यों ने उस मशीन के साथ छेड़खानी आरम्भ कर दी जिसका परिणाम यह हुआ कि मशीन क्षतिग्रस्त हो गई। मैंने स्वयं एक ऐसे मूर्ख को देखा, जिसे एक टेलीविजन सैट किसी इनामी योजना के अन्तर्गत उपहारस्वरूप मिल गया था पर चूंकि उसे विधिवत् चलाना उसने किसी से न सीख कर उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वयं खेलना आरम्भ कर दिया तो उसे इतना क्षति ग्रस्त कर दिया कि उसकी मरम्मत होने पर भी वह सुचारु रूप से नहीं चल सका।

मानव जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए वाचस्पति को यह आदेश दिया गया है कि वह शिष्यों को, श्रोताओं को शरीर के विकास संस्थानों के सम्बन्ध में पूरा ज्ञान प्राप्त कराए ताकि मनुष्य सकल साधनाओं के इस माध्यम से उचित कर्म कर सके। ये विकास संस्थान इस प्रकार हैं—

(१) भूलोक—पाद से नाभि तक का भोग लोक; जिसमें चलना, दौड़ना, मल मूत्र विसर्जन, वीर्य रक्षण, सहन और वहन हैं।

(२) अन्तरिक्ष लोक—नाभि से ग्रीवा तक धारक लोक जिसमें पाचन क्रिया, संकल्प, चेतना, साहस, निर्भीकता, श्रद्धा तथा कर्तृत्वशक्ति का वास है।

(३) द्युलोक ग्रीवा से मस्तिष्क तक का ज्योतिर्मय लोक है, जहां स्वाद, वाणी, घ्राण, प्राण दर्शन, श्रवण तथा विचार केन्द्र स्थित हैं।

यद्यपि मानव शरीर की कार्य प्रणाली ऐसी रहस्यमय और जटिल है, जिसकी पूर्ण जानकारी मानव बुद्धि से सदैव परे रही है, पर एक तथ्य जिस पर समस्त भौतिकवादी वैज्ञानिक और आत्मवेत्ता समान रूप से सहमत हैं, वह यह है कि मानव शरीर एक अनमोल सम्पदा है, एक दिव्य कोष है तथा इस शरीरस्थ आत्मा की उन्नति की कोई सीमा नहीं है। संसार में जो परम चेतना है, वह यदि असीम और अनन्त है तो मानव जीवन अपनी बुद्धि के माध्यम से किस उच्चतम शिखर पर ले जाया जा सकता है, इसकी पराकाष्ठा न अब तक निर्धारित की जा सकी है, न कभी की जा सकेगी। शरीर के तीन लोकों के सात-सात विकास संस्थानों की उन्नति के लिए जिन कोशों की आवश्यकता है, वे भी मानव शरीर में ही विद्यमान हैं।

कोश धन और ऐश्वर्य का एक पर्यायवाची शब्द बन गया है परन्तु वास्तविकता यह है कि जो एक साधन है, जिसके माध्यम से अभीष्ट को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिद्ध किया जा सके, वह ही वस्तुतः कोश है, चाहे वह कोई खोल हो, आवरण हो, समूह हो अथवा पुष्प की बन्धी हुई कली हो। कोश के पूर्व इसीलिए अन्य शब्दों का प्रयोग कर उसके अर्थ को स्पष्ट किया जाता है यथा शब्द कोश जिसमें शब्दों का समूह है, स्वर्ण कोष जहां स्वर्ण धातु विभिन्नाकार में है—यहां तक कि मानव शरीर के भी तीन कोश बना दिए गए, उत्तम कोष, मध्यम कोष और अधम कोष। मस्तिष्क को उत्तम कोष; हृदय को मध्यम तथ नाभि से नीचे वाले भाग को अधम कोष कहा गया है। इन कोषों में क्या है तो उत्तम कोष में धी है जिसमें धारणाएं हैं जिनको अवस्थित करना ही ध्यान है। यह विचार केन्द्र है। विचारों का आदान-प्रदान, उनका प्रेषण और प्राप्तिकरण, तर्क-वितर्क और विश्लेषण सब इसमें होते हैं। मध्यम कोष हृदयस्थ अन्तःकरण है, जो भावना केन्द्र है। यहां चित्त और मन हैं, जिनके माध्यम से आत्मा कर्मरत होता है—जहां इच्छाएं उत्पन्न होती हैं और उनकी पूर्ति के संकल्प होते हैं। अधम कोष में मलमूत्र के स्थान हैं तथा जननेन्द्रियां भी हैं। यह भोग कोष है।

इसी मानव शरीर में एक हिरण्यमय कोष भी है जिसके लिए वेद ने कहा—"तस्यां हिरण्ययः कोषः स्वर्गो ज्योतिषावृतः" यह वह अमूल्य जगमगाता हुआ स्वर्णिम आभा वाला कोष है, जहां आनन्द है और दिव्य प्रकाश है। इस परम कोष में पहुचना ही मानव जीवन का सर्वमहान् लक्ष्य है, जिसके लिए उसे सतत साधनाशील होना है। इस परम दिव्यानन्द वाले कोश में पहुंचने के लिए जिन अन्य धरातलों पर से अग्रसर होना है, उन्हें शरीर के छः कोशों की संज्ञा दी गई है। इनका नाम करण इस प्रकार किया गया है— (१) अन्नमय कोश (२) प्राणमय कोश (३) ज्ञानमय कोश (४) मनोमय कोश (५) विज्ञानमय कोश (६) ज्योतिर्मय कोश

इन कोशों के विकास के लिए ही ऋग्वेद में "षड् विष्टिर" शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रथम कोश जो अन्नमय कहलाता है, वस्तुतः एक जड़ जगत धरातल है, क्योंकि वह स्थूल शरीर का विकास संस्थल है। इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्नमय कोश में पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां हैं । ऋग्वेद के उपरोक्त मन्त्र में इन्हें ही "पञ्च सप्त" कहा गया है । इन इन्द्रियों के अतिरिक्त शरीर के जितने भी अन्य अवयव हैं यथा फेफड़े, हृदय, वक्ष, नितम्ब, आँतें, शिर आदि, वे सब इस अन्नमय कोश से ही पोषण पाते हैं ।

यद्यपि सब कोश एक दूसरे से भीतर जुड़े रहते हैं और एक दूसरे को निरन्तर प्रभावित करते रहते हैं तथापि उनका पृथक् अस्तित्व है, क्योंकि उनका पृथक् कार्य है ।

अन्नमय कोश का कार्य है शरीर को सतत स्वस्थ, सुशक्त और भव्य बनाना, क्योंकि यह आत्मा का गृह है और आत्मा को सकल साधनाएं इसके ही माध्यम से करनी हैं । अन्नमय कोश के नियन्त्रण के लिए अत्यावश्यक है सात्विक और मित आहार । वर्तमान युग में मानव जो इन्द्रियों का दास हो गया है और अपने इन्द्रत्व से च्युत होकर पतित हो गया है, उसके मूल में है तामसिक आहार, राजसिक आहार तथा अमित आहार । मनुष्य के शरीर के अधिकतर रोग उसके अमित आहार के कारण हैं अथवा अभक्ष्य पदार्थों के सेवन के फलस्वरूप । एक बार एक धर्मात्मा के पास एक नरेश ने अपने विश्वस्त कुशल वैद्य को उनकी सेवा में इस आशय से भेज दिया कि जब महात्मा जी अस्वस्थ हों तो वैद्यराज उन्हें औषधि देकर रोगमुक्त कर दें । महात्मा जी जहां भी धर्म प्रचारार्थ जाते, वैद्य जी उनके साथ जाते । पांच वर्ष का दीर्घ समय व्यतीत हो गया पर महात्मा जी एक दिन भी बीमार नहीं पड़े । वैद्यराज ने विचार किया कि यदि यही क्रम रहा तो वे अपनी वैद्यकी विद्या भूल जाएंगे । अतएव उन्होंने एक दिन महात्मा जी से विनम्र निवेदन किया कि वे सहर्ष उन्हें नरेश के पास जाने की अनुमति दें । महात्मा जी ने कहा कि वे जाना चाहें तो बिना किसी अनुमति के ही चले जाएं, क्योंकि उन्हें किसी वैद्य की कभी आवश्यकता न तो पड़ी है और न कभी पड़ेगी । वैद्यराज ने विस्मित होकर प्रश्न किया कि उनके स्वस्थ रहने का रहस्य क्या है ? महात्मा जी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहा—'वत्स ! कोई रहस्य नहीं है। मुझे जब बहुत भूख लगती है तो उसे थोड़ा रखकर अल्पाहार करता हूं और जब अल्प क्षुधा होती है तो निराहार रहता हूं।'

धार्मिक अनुष्ठानों में निराहार रहकर उपवास करना, व्रती बनना शरीर को स्वस्थ रखने के लिए था परन्तु आज तो मनुष्य उनमें भी प्रातः-सायं ठूंस-ठूंस कर खाता है। आज का शिक्षित मनुष्य तो इतना मूर्ख है कि उसे अपने भोजन तक की जानकारी नहीं है। ज्ञान और विज्ञान के इतने विकास के पश्चात् भी मनुष्य यह नहीं जान सका कि वह क्या खाए, क्या न खाए और किस मात्रा में खाए। आज विश्व में अल्पाहार से मनुष्य नहीं मरते अपितु अधिक आहार के कारण उदर के रोगों से पीड़ित होकर मरते है। एक ओर प्रकृति के नियमों का उल्लघन कर रोगी बनते हैं तो दूसरी ओर स्वास्थ्य के लिए अधिकाधिक औषधियों का सेवन करते हैं। आज तो स्थिति यहां तक दयनीय हो गई है कि औषधियां मानव के आहार का दैनिक अंश बन गई हैं। मनुष्य इधर भोजन करता है, उधर उसे पचाने के लिए औषधियों का सेवन करता है। स्वाद के वशीभूत होकर राजसिक भोजन तो करता ही है, उसे भी पाचन शक्ति की सीमा से अधिक करता है। अतएव उस का शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है। जब रोगों के कारण शरीर दुर्बल और निर्बल हो जाता है तो उसकी जर्जरता दूर करने के लिए मनुष्य शक्तिवर्धक दवाइयों तथा इन्जेक्शनों का सेवन करता है पर यह मूर्ख इसे जानते हुए भी कि उसके रोग का मूल क्या है, रसना के स्वाद का त्याग नहीं करना चाहता। जब मनुष्य मदिरा पान करेगा, मांसाहारी बनेगा तो उसके जीवन का नाश न होगा तो और क्या होगा? उदर शूल से पीड़ित, वायु रोग से ग्रस्त. धूम्रपान के कारण दुर्बल फेफड़े, तामसिक पदार्थों के सेवन से भोग वृत्ति के कारण ब्रह्मचर्य का नाश जीवन का सतत और अभित: सर्वनाश कर रहा है। फिर भी मनुष्य अपने को नियन्त्रण में नहीं कर पा रहा। इसका एकमेव कारण है उस का इन्द्र न बनना और उसके फलस्वरूप इन्द्रियों पर कोई नियन्त्रण न होना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिन्हें जीवन में आनन्द की कामना है और जो आनन्दमय के उच्चतम कोश में जाना चाहते हैं, उन्हें इन्द्र बनना होगा और अपनी इन्द्रियों का दमन करना होगा, उन्हें अपने वश में करना होगा न कि उनके वशीभूत होकर चलना होगा। कल्पना करें उस भव्य रथ की, जो बहुत भव्य हो और उसमें आप सुन्दर वस्त्र पहन कर बैठे हों। रथ में दस शक्तिशाली अश्व जुते हों पर यदि उन्हें नियन्त्रण में रखने वाली लगाम और उस लगाम का उपयोग करने वाला ठीक न हों तो उस रथ की और रथी की क्या दुर्दशा होगी, जब अश्व अपने मन पंसद चारे को देख कर रथ को उधर ले जाने के लिए अग्रसर हो जाएं। रथ तो टूटेगा ही, रथी भी आहत होगा। रथी निकला था रथ विहार से कहीं लक्ष्य पर पहुंचने के लिए पर मार्ग के मध्य में ही दुर्गति को प्राप्त हो गया।

जो सर्वथा अमिताहारी है, अभक्ष्य का निरन्तर सेवन कर रहा है तथा दुराचार के कारण जो युवावस्था में ही तन से जर्जरित हो गया है और जो संसार में केवल विटामिन के इन्जेक्शनों और टानिकों के आश्रित होकर रहा है, वह चाहे कितना ही बड़ा प्रशासनाधिकारी क्यों न हो जाए, वह इसे अनुभूत नहीं कर सकता कि मानव जीवन का आनन्द क्या होता है ? जो भौतिक जगत् के क्षीण आनन्द से ही वंचित है वह उस परमानन्द की कैसे कल्पना कर सकता है जो इच्छा निवृत्ति से परमात्म-भाव होने पर प्राप्त होता है। अतः इन्द्र बनने के लिए सर्वप्रथम मनुष्य को अपना आहार शुद्ध करना है। मांसाहार और मदिरापान मनुष्य के स्वाभाविक आहार और पेय नहीं। श्रुति कहती है—

ब्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्।
एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय
दन्तौ मा हिंसिष्ट पितरं मातरं चरं॥

अ. ६।१४०।२

अर्थात् तुम दोनों [नर-नारी] चावल खाओ, जौ, तिल तथा माष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खाओ। रमणीयता की प्राप्ति के लिए तुम दोनों का आहार अंश वही है जिसे तुम दाँतों द्वारा खा सकते हो। हिंसा द्वारा किसी माता-पिता को क्लेशित न करो।

जिह्वा की लोलुपता के कारण पशुओं का वध करके जो मांस को भोजन बनाते हैं, उनके लिए वेद वाणी कहती है—

शेरभक शेरभ पुनर्वोयन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥

(अ० २।२४।१)

अर्थात् हे (शेरभक) नीच हिंसक! हे (शेरभ) वधिक! (किमी दिनः) सर्वभोजियो! (वः यातवः पुनः यन्तु) तुम्हारे अनुयायी लौट जाएं (हेतिः पुनः) तुम्हारे शस्त्र भी वापस चले जाएं (यस्य स्थ, यः वः प्राहै त् न तं अत्त) तुम जिसके सम्बन्धी हो और जिसने तुम्हें भेजा है तुम उन्हें खाओ (स्वमांसानि अत्त) अपने मांस को खाओ।

किस व्यंग्यात्मक शैली से मांसाहार का निषेध वेद ने किया है। यह निषेध इस वैज्ञानिक आधार पर किया गया है कि तामसिक आहार से नाश होता है, क्योंकि उस आहार से रक्त प्रदूषित होता है, रक्त में उष्णता की मात्रा अधिक हो जाने से नाना प्रकार के शारीरिक विकार उत्पन्न हो जाएंगे, इसलिए चाहे कच्चा मांस हो, चाहे उसे पकाया जाए और चाहे अंडे हों, वे सब नाश को प्राप्त कराने वाले हैं।

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः।
गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि॥

(अ० ८-६-२३)

अर्थात् जो (आमं मांसं) कच्चा मांस (पौरुषेयं क्रविः) मनुष्यों के द्वारा पकाया हुआ तथा (गर्भान् खादन्ति) पक्षियों के गर्भों अर्थात् अण्डों को खाते हैं वे (केशवाः) शरीर को शवधाम बनाने वाले हैं [उनका] (नाशयामसि)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाश कर देना चाहिए। मानव धर्म के जो प्रतिकूल है, उसका स्पष्ट निषेध वेद ने किया है।

इसी भांति मदिरापान के संबन्ध में भी वेद ने सत्य बोध कराया है—

हृत्सु पीतासो युद्ध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते॥

(ऋ. ८-१-१२)

अर्थात् (हृत्सु सुरायां पीतासः) जी भर कर मदिरा पान करने वाले (दुर्मदासः न युद्ध्यन्ते) बदमस्तों की भांति लड़ते हैं (नग्नाः न अधः जरन्ते) नङ्गों की भांति रात्रि को कोलाहल करते हैं। मदिरा पान करने वालों की दुर्दशा का कैसा सत्य वर्णन है।

एक बार एक सुशिक्षित महोदय, जिनके नाम के आगे विश्वविद्यालय की अनेक उपाधियां लगी हुई थीं, मेरे वेद व्याख्यानों से प्रभावित होकर आए और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैंने आयुर्वेद भी पढ़ा है। मेरे स्वीकारात्मक उत्तर पर उन्होंने कहा कि उन्हें कोई उपचार बताया जाए। उनके पेट में वायु का प्रकोप रहता है। दिल घबराता है। उनका पेट बड़ा बेडौल था। उसका आहार भी बड़ा था। शरीर भी भारी था। सांस भी फूल रही थी। मैंने जब खान पान के बारे में पूछा तो पता चला कि मांसाहारी हैं, मदिरापान भी करते हैं, धूम्रपान भी करते हैं। सब प्रकार की औषधियों का सेवन कर चुके हैं यथा अंग्रेजी, यूनानी, होम्योपैथिक, देशी पर कोई लाभ नहीं हुआ। मैंने कहा कि यदि वे दीर्घ जीवन चाहते हैं तो उन्हें ये व्यसन छोड़ने पड़ेंगे। दही-खिचड़ी का आहार लेना पड़ेगा—फलों का रस पीना पड़ेगा। वे बहुत निराश हुए और कहने लगे कि उन्हें छोड़ा तो जीवन में आनन्द क्या रहेगा। वे केवल औषधि के लिए आए थे और अंग्रेजी में भी वार्तालाप कर अपने पढ़े-लिखे होने पर गौरवान्वित हो रहे थे। मैंने उन्हें उनकी प्रिय भाषा में ही समझाया कि Prevention is better than cure अर्थात् चिकित्सा से संयम अच्छा है पर यह बात न उनकी समझ में आनी थी और न आई, जिसका परिणाम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह है कि वे आज तक औषधियों का सेवन कर रहे हैं और पहले से भी अधिक अस्वस्थ हो गए हैं। जीवित होते हुए भी मृत के समान हैं। वेद ने मनुष्यों के कल्याणार्थ आदेश दिया था।

इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह।
दूतौ यमस्य मानुगा अधि जीवपुरा इहि॥

(अ० ५·३०-६)

अर्थात् हे मनुष्य! तू इस संसार में पूर्ण मन के साथ पुरुषार्थ कर। दो यमदूतों—व्यसन और विलास का अनुगमन न कर। जीवित है तो जीवपुरी में निवास कर।

अतएव इन्द्र बनकर आत्मा को अपनी इन्द्रियों का नियन्त्रण करना पड़ेगा। मनुष्य रात-दिन देखता है किमछली स्वाद के कारण कांटा गले में फंसाकर मरती है। पतंगा ज्योति के सम्मुख अन्धा होकर दौड़ता है और जलता है। मृग संगीत श्रवण में मस्त होकर फंसता है। भ्रमर पुष्प की सुगन्ध के कारण पंखड़ियों में बन्दी हो जाता है तथा हाथी स्पर्श सुख में नकली हस्तिनी के शरीर से रगड़ लगने के लिए गड्ढे में गिरता है और पकड़ा जाता है। जब अपनी एक-एक दुर्बलता के कारण पशु-पक्षी जगत् में ऐसा होता है तो मनुष्य के शरीर में जो पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं, वे यदि अपने-अपने विषयों में रत रहेंगी और यदि आत्मा उन पर नियन्त्रण न रखेगा तो उस शरीर की क्या दुर्दशा होगी? पांच ज्ञानेन्द्रियों तथा पाँच कर्मेन्द्रियों में से प्रत्येक का अपना एक-एक विषय है, जिसे आत्मा को इन्द्र बनकर अपने नियन्त्रण में रखना है यथा नेत्र को भद्र दर्शन से, श्रोत्र को भद्र श्रवण से, नासिका को सुगन्ध से, जिह्वा को स्वादशून्य बनाकर, त्वचा को सुस्पर्शी की भावना से, मुख को सुवाणी तथा सीमित सात्त्विक आहार से, हस्त को सेवा कार्य से, पाद को सुगमनीय बनाकर, गुदा को रोग रहित कर मल त्याग से, उपस्थ (पुरुष देह) को ब्रह्मचर्य से और जननेन्द्रिय (स्त्री देह) मैथुन त्याग से।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्नमय कोश को सुव्यवस्थित रखने के लिए जिन अन्य बातों को नियमित करना है—वे निम्नलिखित हैं सात्विक विहार, सात्विक निद्रा, खान-पान का सुनिश्चित समय, शारीरिक व्यायाम, मिताचार, प्रसन्नता तथा शुद्धता।

जो सुनिश्चित समय पर महत्व कार्य छोड़ कर खान-पान करता है, वह स्वस्थ रहता है। जो समय पर रात्रि के प्रथम प्रहर में निश्चिन्त होकर शयन करता है और प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में उठता है, वह नीरोग रहता है। जो सायंकाल का भोजन सूर्यास्त के पूर्व करेगा और सात्विक निद्रा लेगा, उसकी पाचन क्रिया सदैव ठीक रहेगी। भोजन धीरे-धीरे चबा कर किया जाए। किसी ने सत्य कहा है कि भजन और भोजन में शीघ्रता कदापि न करनी चाहिए, क्योंकि उससे लाभ नहीं हानि होती है। खाए हुए भोजन को पचाने के लिए शारीरिक व्यायाम भी आवश्यक है। प्रातः सायं शुद्ध वायु में भ्रमण तो किया जा सकता है। स्वभाव को विनोदप्रिय बनाया जाए तो सदैव प्रसन्नता रहेगी। मिताचारी बन कर न किसी की चुगली करें न निन्दा क्योंकि इससे व्यर्थ की उत्तेजना होती है जिससे सत्व का नाश होता है। छान्दोग्योपषद् में कहा गया है—

आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृति स्तम्भे सर्वग्रन्थीना विप्रमोक्षः ॥

अर्थात शुद्ध आहार से अन्तःकरण शुद्ध होता है। हमारी स्मरण शक्ति अटल हो जाती है। स्मृति ध्रुव अटल होती है तो ज्ञान की ग्रथियां ज्ञानात्मा के लिए मोक्ष का द्वार खोल देती हैं।

आत्मा को इन्द्रत्व से अपने को विभूषित कर अपने को इन्द्र बनाना है ताकि उसकी सब इन्द्रियां उसकी अनुशासित रहें। इन्द्र कौन है? वेद वाणी कहती है —

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो
यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव
यो अच्युतच्युत स जनास इन्द्रः ॥
(ऋ० २-१२-९ अ० २०-३४-९)

अर्थात् (यत्माताऋते) जिसके बिना (जनासः न वि + जयन्ते) जन विजयी नहीं होते, वीर (युध्यमानाः) युद्ध करते हुए (यम्अवसे हवन्ते) जिसे रक्षार्थ पुकारते हैं (यः विश्वस्य प्रतिमानम् बभूव) जो विश्व का नियन्त्रण करने में सक्षम है (अच्युताच्युत) जो अडिगों को भी डिगाने का सामर्थ्य रखता है (जनासः सः इन्द्रः) लोगों ! वही इन्द्र है ।

यह इन्द्र कितना महान है । इन्द्र वह पौराणिक इन्द्र नहीं जिसे स्वर्ग का का राजा कहा जाता है और जो इन्द्र सभा का आयोजन करता है, जहां सुरापान होता है, रम्भा, उर्वशी, मेनका आदि अप्सराएं नृत्य करती हैं । इन्द्र का इन्द्रत्व तो उसके ब्रह्मचर्य के कारण है, जिसके लिए वेद ने कहा है-

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ॥
(अ० ११-५-१९)

(ब्रह्म+चर्येण तपसा) ब्रह्म के आचरणरुपी तप से (देवाः मृत्युम् अपाघ्नत) मार भगाया (ह) निश्चयात्मक रूप से (इन्द्रः) इन्द्र ने (ब्रह्म+चर्येण देवेभ्यः स्वः आ+भरत्) उस ब्रह्मचर्य से देवों के लिए सुखमय प्रकाश को भर दिया । ब्रह्म का आचरण आत्मा को अपनाना है क्योंकि उसके बिना इन्द्रियां उसके वशीभूत नहीं होंगी । आत्मा को इन्द्रियों के दमन के लिए शक्ति चाहिए जो केवल ब्रह्मचरण को अपनाने से मिलेगी । यह शक्ति कैसे प्राप्त होगी ? वेद के इन्द्रसूत्रों का मनन उसका वास्तविक बोध कराएगा यहां प्रतीक रूप में इन्द्र सूत्र का एक मन्त्र दिया जा रहा है—

वृक्षवृक्षे नियता मीमयद्गौ स्ततो
वयः प्र पतान पुरुषादः ।
अथेदं विश्वं भुवनं भयात इन्द्राय
सुन्वदृषये च शिक्षत् ॥(ऋ १०-२७-२२)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(वृक्षे-वक्षे नि+यता गौ भीमयत्) वृक्ष वृक्ष में जो गौ नियत होकर रम्भा रही है (ततः पुरुषः+अदः वयः प्र पतान) उससे पुरुष भक्षक उड़ जाएं। (इन्द्राय सुन्वत्) इन्द्र के लिए सवनीय होता हुआ (च) तथा (ऋषये शिक्षत्) ऋषि शिक्षार्थ (अथ) अब (इदम्) यह (विश्वम्) भुवनम् भयाते) यह विश्व भुवन भय ग्रस्त हो रहा है।

इन्द्र इन्द्रियवान् आत्मा है। वृक्ष जिसकी वृद्धि और क्षय होते हैं—जीवन का पर्यायवाची शब्द है। गौ गतिशील आत्मा है, जो साधना पथ पर अग्रसर होकर ब्रह्म का आह्वान कर रही है। 'पुरुषादः वयः पुरुष को खाने वाले झपाटा मार वेगयुक्त पक्षी हैं। 'भुवन' भोग रूपी जगत् हैं।

मानव के जीवन सदन में आत्मा का वास है। उसमें अवसर की ताक लगाए वेगवान् पक्षी हैं जो उसके पुरुषत्व को नोच-नोच कर खा जाते हैं। ये पक्षी ही षड्रिपु हैं—काम क्रोध, लाभ, मोह, द्वेष और अहंकार। जब साधक इन्हें अपने जीवन रूपी वृक्ष से साधना के माध्यम से उड़ा देता है तो उस इन्द्र से समस्त भोगरूपी जगत् भयभीत होता है। ऐसा इन्द्र ही अन्य इन्द्रों और ऋषियों के लिए अपने साधनामय जीवन से उन्हें सुशिक्षित करता है और उन्हें भी ज्योतिर्मय मार्ग पर बढ़ने के लिए सुप्रेरित करता है।

'इन्द्रोऽहम्' की इस वेदोक्ति को ऐसा इन्द्र ही केवल वाणी से नहीं, अपनी जीवनी से भी सार्थक करता है।

अंधकार को मिटाने के लिए गुरुकुल
शिक्षा प्रणाली को राष्ट्रीय स्तर पर
आरम्भ किया जाए।

—स्वर्गीय महात्मा वेद भिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'च्युत' वह है जो पतित है, नीचे गिरा हुआ है, 'च्युति' जीवन की पतितावस्था है और 'अच्युति' उत्थान की परिचायक है। अतएव 'अच्युत' वह है जो अपतित है. ध्रुव है, अयर्वा है। इस संसार में परमात्मा स्थिर है, ध्रुव है, अटल है। विश्व को वह जिन नियमों के अनुसार चला रहा है; उनमें न कोई परिवर्तन हुआ है और न कभी होगा। जो इस परब्रह्म के कार्यकलापों को देखकर तदनुकूल आचरण करते हैं, वे ही ब्रह्मचारी बनकर अच्युत बनते हैं। जितेन्द्रिय आत्मा हृषीकेश बनकर ही अच्युत बनता है। 'हृषीक' का अर्थ है इन्द्रिय समूह और 'ईश' का अर्थ है स्वामी। इन्द्रियों का दास नहीं, उनका स्वामी ही हृषीकेश कहलाता है। हृषीकेश ही वह इन्द्र है जो इन्द्रत्व धारण कर इन्द्रियों को सतत अपने वश में रखता तथा दिन प्रति दिन, पल पल और क्षण क्षण अपने को आत्मना व मनसा अच्युत बनाता है। अच्युत बनने के लिए ही वह ब्रह्मचर्य से सर्वतः अपने को युक्त रखता है और अच्युत बनकर इस जगत् में युग-युगों तक जगमगाता है।

विक्रमादित्य 'वसन्त'

आर्य हवन सामग्री

सुगन्धित पौष्टिक रोगनाशक आर्य हवन सामग्री से ही नित्य यज्ञ करें। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सुखों को प्राप्त करें।

नं. १ स्पैशल चन्दन गुग्गल हवन सामग्री	२५) किलो
नं. २ आर्य हवन सामग्री	१०) किलो
नं. ३ हवन सामग्री	८) किलो

धर्मवीर आर्य झण्डाधारी बहादा ठाकुरदास सराय रहेला, नई दिल्ली-5

टैलीफोन नम्बर—526545

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

सच्चा संन्यासी

—देव

भारत की संस्कृति में सर्वोच्च स्थान त्याग का है। हमारे देश में लंगोटी ही पुजती रही है। पढ़िये उत्कृष्ट कोटि के त्याग की शिक्षा देने वाली कहानी।

कौशल देश में वेहलिंग नामक एक कस्बा था। उसमें घटिकार नाम का एक कुम्हार रहता था। उसके माता-पिता अन्धे थे। वह रात-दिन अपने माता-पिता की सेवा में लगा रहता था। त्यागी इतना था कि दीन-दुखियों को अपना सब कुछ अर्पण कर देने में उसे तनिक भी झिझक न होती थी। किसी को कष्ट देना वह जानता ही न था।

घटिकार का एक मित्र था। उसका नाम था जोतिपाल। दोनों में बड़ी मैत्री थी। एक दिन घटिकार के कानों में आवाज पड़ी कि श्रमण कश्यप वेहलिंग के समीप ही एक वाटिका में निवास कर रहे हैं। कश्यप का नाम सुनते ही घटिकार के हृदय की श्रद्धा उबल पड़ी। उसने जोतिपाल से कहा कि योगी कश्यप पास ही की वाटिका में निवास कर रहे हैं। चलो, उनका दर्शन कर आयें।

'जाने भी दो घटिकार' जोतिपाल ने उत्तर दिया। 'मुण्डक सन्यासी के दर्शन करने से क्या होता है?

मगर घटिकार कब मानने लगा। वह स्नान करने के बहाने जोतिपाल को योगी कश्यप के पास ले गया। दोनों कश्यप को आदर सहित प्रणाम करके बैठ गए। कश्यप ने दोनों की ओर दृष्टिपात करके कहा—'क्या है भाई, कहां चले?'

'महाराज', जोतिपाल ने उत्तर दिया। 'मेरा मित्र घटिकार आपका उपदेश सुनना चाहता है।'

कश्यप ने घटिकार की ओर आंख उठाई। उन्होंने दोनों को उपदेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया। जोतिपाल कश्यप के उपदेश से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसने संन्यास ग्रहण कर लिया।

जोतिपाल ने कश्यप के पास से लौटकर मार्ग में कहा 'घटिकार! आश्चर्य है। योगी के उपदेशों को सुनकर भी आप अब तक संन्यासी न हुए। क्या तुम्हारे हृदय पर उनके उपदेशों का कुछ भी प्रभाव न पड़ा।

घटिकार ने उत्तर दिया 'ऐसी बात नहीं है। कश्यप की अमृत वाणी ने मेरे हृदय पर काफी प्रभाव डाला है परन्तु मेरे लिए तो अन्धे माता-पिता की सेवा ही संन्यास है। मैं अपनी उसी संन्यास वृत्ति में प्रसन्न हूँ।"

जोतिपाल चुप हो गया और कश्यप के साथ वाराणसी चला गया। वहां योगी कश्यप का प्रिय शिष्य राजा किकि था। उसने योगी की बहुत प्रेम और श्रद्धा से सेवा की और एक वर्ष तक वाराणसी में रहने की प्रार्थना की। परन्तु योगी राजी न हुए। उनकी अनुनय-विनय और आग्रह सब व्यर्थ गए। इससे राजा को दुःख हुआ? उसने दुखी, उदासीन और कुछ चंचल होकर कहा—

'भगवन्! क्या मुझ से बढ़कर संसार में आपका कोई सेवक है?

कश्यप ने उत्तर दिया हां राजन! आपसे भी बढ़कर मेरा एक प्रिय सेवक है। वह बहलिंग गांव का रहने वाला है। उनका नाम घटिकार है। जाति का कुम्हार और मुझसे बढ़कर ही। किकि के मन में एक ईर्ष्या-सी जागृत हो उठी। कश्यप ने उनके मन का भाव ताड़कर कहा 'राजन्! आश्चर्य करने की बात नहीं। घटिकार सचमुच एक असाधारण पुरुष है।

कुछ दिन हुए मैं उस समय बेहलिंग गांव के समीप एक उपवन में रहता था। बरसात का समय था। भीषण वर्षा के प्रकोप से मेरी गंध कुटी चूने लगी। मैंने भिक्षुओं को आदेश दिया, जाओ! घटिकार की झोंपड़ी उखाड़ लाओ। उस समय घटिकार ने अपनी झोपड़ी बिल्कुल नई तैयार की थी।

घटिकार अपनी झोंपड़ी से कहीं बाहर गया हुआ था। उसके अन्धे माता-पिता झोंपड़ी में सुख से सोए थे। भिक्षुओं ने पहुंचकर उसकी घास-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फूंस की झोंपड़ी उजाड़नी शुरू की । अंधों ने आवाज लगाई 'कौन ? भिक्षुओं ने उत्तर दिया 'कश्यप की गंध कुटी चू रही है।'

अंधों ने प्रसन्नता से लपक कर कहा 'ले जाओ, भाई ले जाओ। गंध कुटी के चूने से योगिराज को कष्ट होता होगा।

घटिकार जब घर लौटा तब उसे यह हाल मालूम हुआ। वह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। घटिकार का यह त्याग क्या बड़ा नहीं है राजन् !

किंकि ने उत्तर दिया 'सचमुच भगवन् ! घटिकार बहुत बड़ा पुरुष है।'

राजा ने प्रसन्न होकर घटिकार के पास गाड़ियों पर लदवाकर अतुल सम्पत्ति भेजी और उससे यह सप्रेम निवेदन किया कि तुम मेरे इस उपहार को स्वीकार करो। घटिकार ने वह सम्पत्ति स्वीकार न की और कहला भेजा 'राजन् ! मुझे यह न चाहिए। इसकी शोभा तो राज कोष में ही होगी।'

घटिकार के इस त्याग को देखकर राजा आश्चर्यचकित रह गया।

ठाकुर गौतम सिंह जी को मातृशोक

जनज्ञान के प्रचार-प्रसार में हमारे परम सहयोगी ठाकुर गौतम सिंह जी की माता श्रीमती राधिका बाई जी पिछले दिनों दिवंगत हो गई। उनकी आयु ८५ वर्ष थी।

ठाकुर गौतम सिंह जी ने उनकी स्मृति में ग्राम रामहेपुर (जिला बिलासपुर) में आयुर्वेदिक चिकित्सा महाविद्यालय, चिकित्सालय और फार्मेसी की स्थापना की है।

जनज्ञान परिवार स्वर्गीया माता जी की स्मृति में नतमस्तक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिन्दा लाश की तरह जीने को विवश ये विधवाएँ

—रेणु रावत

देवराला में एक अठारह-वर्षीय युवती के देह दहन ने राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना को झकझोर दिया है। सती के नाम पर किये गये इस नृशंस हत्याकांड से देश का विराट् जनमानस मर्माहत हुआ है। इसके माध्यम से नारी उत्पीड़न के अन्य कारणों पर भी बहस छिड़ी है। यह उचित भी है कि विधवा दहन के मूल कारणों को खोजा जाये। आखिर क्यों नारी के अस्तित्व को नकारकर उसे एक भोग्य वस्तुमात्र मान लिया गया, जिसकी वीभत्स परिणति विधवा दहन के रूप में देखने को मिली।

आज भी विधवा महिलाओं को अभिशप्त मानने और उन्हें दयनीय जीवन जीने के लिए विवश करने जैसी कुप्रथाएं इसके लिए जिम्मेदार हैं। विधवाओं की दयनीय दशा में आज भी बहुत थोड़े-से क्षेत्रों में ही परिवर्तन आया है। देश के अधिकतर क्षेत्रों में आज भी विधवा को अभागी, पतिहन्ता और अपशकुनी माना जाता है। बंगाल में तो विधवाओं की बहुत दारुण दशा रही है। महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर और शरत्चन्द्र ने अपने उपन्यासों में विधवाओं की दुर्दशा के हृदयद्रावक चित्र खींचे हैं। अपनी लेखनी द्वारा जहां इन मनीषी रचनाकारों ने विधवाओं की दुर्दशा की ओर समाज का ध्यान खींचा, वहीं अनेक समाज सुधारकों ने उनकी दशा सुधारने और उनके पुनर्विवाह के लिए अनेक आन्दोलन भी चलाए। किन्तु दुर्भाग्य से इन सुधार आन्दोलनों का प्रभाव सीमित ही रहा। आज भी बंगाल की हजारों विधवाएं वृन्दावन और हरिद्वार जैसे पवित्र स्थलों में नारकीय जीवन बिता रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजस्थान में भी विधवाओं की स्थिति दयनीय है । आटे की लपसी खाना, काले वस्त्र पहनना और उत्सव-समारोहों से दूर रहना आदि उनकी दुर्भाग्यपूर्ण नियति है । कम्प्यूटर युग की क्रान्ति के साथ २१वीं शती में जाते हुए देश की यह कैसी विडम्बना है कि समाज के इस श्रेष्ठ आधे भाग की स्थिति अभी भी कलंकपूर्ण बनी हुई है । शायद इसका कारण यही है कि विकास के शिखर स्पर्श करने की योजनाओं में इन महिलाओं की दयनीय दशा के इस कलंक को मिटाने की आवश्यकता को महत्वपूर्ण नहीं माना गया ।

यही कारण है कि जब कहीं किसी देवराला में कोई रूपकुंवर जिन्दा जला दी जाती है तो हमें अपनी सामाजिक सड़न का अहसास होता है और फिर रूपकंवर का दहन नारी उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक बन जाता है । देह दहन के विरुद्ध तात्कालिक संघर्ष द्वारा चेतना जगाना निश्चित रूप से परिवर्तन की दिशा में एक अच्छी शुरुआत है किन्तु रोग के मूल कारण पर सशक्त प्रहार किये बिना उसका उपचार तो कदापि संभव नहीं और यह एक तथ्य है कि मूल रोग है नारी को दयनीय बनाने वाली अनेक संकल्पनाएं, जिनमें से वैधव्य की संकल्पना महिलाओं के विरुद्ध सबसे बड़ा अपराध है ।

अन्धेरा ही अन्धेरा

एक महिला शोध संस्थान के सर्वेक्षण से विधवाओं की स्थिति के बारे में चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं । वैधव्य की यातना भुगतने वाली महिलाओं में १८ प्रतिशत युवतियां है, जिनकी उम्र २५ वर्ष से अधिक नहीं है । विधवाओं में ३ प्रतिशत तो बेचारी १५ वर्ष से कम अवस्था की बालिकाएं ही हैं । जो किशोरियां जीवन का ठीक प्रकार से अर्थ भी समझ न सकी थीं, वे वैधव्य की दारुण यातनाएँ भोग रही हैं । ४१ प्रतिशत विधवाएं २५ से ४० वर्ष आयु वर्ग की हैं । इस प्रकार ६२ प्रतिशत विधवाओं के सामने पहाड़-सी जिन्दगी जीने के लिए पड़ी है । क्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामाजिक उत्पीड़न की ज्वाला में तिल-तिल झुलसती ये विधवाएं एक बार जिन्दा जल जाने की पीड़ा की अपेक्षा हजार गुना अधिक पीड़ा नहीं भुगत रहीं ? इनके अंधेरे भाग्य में न कोई प्रकाश किरण है और न भविष्य की आशा।

पराश्रय हो नियति

आर्थिक दृष्टि से परावलम्बन इनकी इससे भी बड़ी समस्या है। सर्वेक्षण से पता चला है कि २४ प्रतिशत विधवाओं ने कभी पाठशाला की सूरत ही नहीं देखी। १८ प्रतिशत विधवाएं कक्षा चार तक पढ़ी हैं और ५३.५ प्रतिशत सिर्फ हाईस्कूल तक पहुंच पाईं। केवल ३.५ प्रतिशत इन्टर और १२.५ प्रतिशत इससे ऊपर की शिक्षा प्राप्त कर पाई। नारी शिक्षा के बारे में रूढ़िगत धारणाओं का अभिशाप इन विधवाओं को जीवन भर भुगतना पड़ेगा। लड़कियों की शिक्षा के बारे में यह विकृत चिंतन कि इन्हें पढ़ाकर क्या करना है, वहां इन्हें घर-गृहस्थी ही तो करनी है, इन विधवाओं के दुर्भाग्य को और भी अंधकारपूर्ण बना देता है।

शिक्षा के अभाव में इन विधवाओं को उचित आजीविका भी नहीं मिल पाती। ऐसी स्थिति में इन्हें उस समाज में शोषण से कौन बचा सकता है, जहां पहले से ही उन्हें दुर्भाग्यसूचक प्राणी माना जाता है।

कोई भी काम न करने वाली विधवाओं की स्थिति तो और भी अधिक दयनीय है। ये विधवाएं अपने ही बच्चों, पिता, सास, ससुर और रिश्तेदारों के आश्रय में रहती हैं। ऐसी विधवाओं की संख्या कोई कम नहीं है। ५७ प्रतिशत विधवाएं इस प्रकार पूरी तरह पराश्रित हैं।

विधवाओं का पुनर्विवाह इस समस्या का एक उपयुक्त हल अवश्य है। विधवा विवाह के लिए समाज सुधारकों ने अनेक आन्दोलन भी किये किन्तु विधवाओं को दुर्भाग्यसूचक मानने के दीर्घकालीन संस्कार इस रास्ते में काफी बड़ी बाधा हैं।

विचित्र बात यह है कि विधवाओं के दुर्भाग्य की मानसिकता से पुरुष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही आक्रान्त नहीं बल्कि स्वयं विधवाएं भी अधिक आक्रान्त हैं । इसीलिए वे पुनर्विवाह से भी डरती हैं। वैधव्य के दिनों में भोगी यातनाएं उनमें पुनर्विवाह के लिए भय उत्पन्न करती हैं। पुनर्विवाह के प्रति रुझान न होने का कारण विशेष कर यह भय है कि सौतेला पिता उनके बच्चों के प्रति निर्मम हो सकता है। अपने प्रति उपेक्षा और उलाहनों का भय भी उन्हें पुनः विवाह बंधन में बंधने से रोकता है।

जब तक आर्थिक परावलम्बन, शोषण और सामाजिक उपेक्षा झेलती इन हजारों विधवाओं के परित्राण के ठोस उपाय नहीं किये जायेंगे, तब तक देह दहन की अमानुषिक विकृति का किसी प्रकार दमन भी कर दिया जाये तो सामाजिक रूढ़ियों के कोड़ों से पिटती और हजारों वर्जनाओं और बहिष्कारों की आग में तिल-तिल जलती इन विधवाओं का नित्य दहन कैसे रोका जा सकेगा।

समाधान क्या है ?

विडम्बना यह है कि प्रायः सभी सामाजिक संस्थाएं, राजनैतिक दल और महिलाओं के संगठन देह दहन जैसे क्रूरता से नग्न होते सामाजिक शील की रक्षा के लिए चिंतित तो होते हैं, किन्तु अपने कर्तव्य को आन्दोलनों और प्रदर्शनों द्वारा सरकार पर दबाव डालकर कानून बनवाने तक ही सीमित कर रह जाते हैं। निश्चय ही यह कुछ कर लेने का सन्तोष पा लेने का छोटा रास्ता (शार्ट कट) है। परन्तु यह भी सच है कि इससे कभी स्थितियों में परिवर्तन नहीं आता।

विधवाओं की दयनीय दशा में परिवर्तन के लिए भी इस विकृत और निराधार अवधारणा पर योजनाबद्ध प्रहार करना होगा। इसके लिए उन महिलाओं में वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करनी होगी, जो वैधव्य के नाम पर लादे गए बहिष्कारों को विवश होकर ढोती रहती हैं। उन्हें विधुर पुरुष के समान ही जीवन जीने के लिए प्रेरित करना होगा।

लेकिन यह तभी संभव होगा, जब उन्हें परावलम्बन से मुक्ति मिलेगी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और उनका आर्थिक पुनर्वास हो सकेगा। विधवाओं को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिए सामाजिक संगठनों को सघन योजनाएं बनानी चाहिए। उनके लिए रोजगार एवं शिक्षा के साधन और सस्ते तथा निःशुल्क आवासों की व्यवस्था करनी होगी। विधवाओं के साथ विवाह के लिए युवकों में आन्दोलनात्मक चेतना जगाई जानी चाहिए।

इस प्रकार के रचनात्मक और संगठित उपायों से ही विधवा समस्या का यह नासूर समाप्त हो सकेगा, जिसके कारण हमारे राष्ट्र और समाज का चेहरा यदा-कदा देह दहन जैसी विकृतियों से लांछित हो जाता है।

वैदिक विचार धारा के प्रचार

प्रसार पर बल : राकेशरानी जी का उद्बोधन सिवहारा (जिला बिजनौर)। यहां २७ नवम्बर को स्थानीय आर्य समाज के ७४ वें वार्षिकोत्सव पर अपने विचार प्रकट करते हुए दयानन्द संस्थान और अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी जी ने कहा कि आज सारा संसार भारत की ओर निहार रहा है। भौतिक उन्नति में अन्य देश हम से आगे हैं, लेकिन शान्ति का आध्यात्मिक सन्देश केवल भारत के पास है। अपनी शान्त-गम्भीर वाणी में जनता को सम्बोधित करते हुए राकेशरानी जी ने कहा कि आर्य समाज का तीसरा नियम स्पष्ट रूप से कह रहा है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसका ध्वनितार्थ यह हुआ कि अन्य धर्म गौण हैं।

राकेशरानी जी ने जोर देकर कहा कि आर्य समाज को वेद प्रचार-प्रसार के कार्य को प्रमुखता देनी चाहिये जितना वैदिक विचारों का प्रचार-प्रसार होगा, उतना ही सुख, शान्ति, चैन और आनन्द बढ़ेंगे।

उन्होंने कहा कि देश-विदेश की सब भाषाओं में वेदों का अनुवाद होना चाहिये। अपने इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करके ही हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य कहलाने के अधिकारी बन सकेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज का इन्सान

यह आज का इंसान, पैसे को बिलखता इंसान ।
खून का प्यासा इंसान आत्मा से अतृप्त इंसान ।
इंसानियत को रोता इंसान, सच को न पहचानता इंसान ।
फूलों की सेज पर सोता इंसान, फिर भी दिन-रात कराहता इसान ।
कांटों की फसल उगाता इंसान, फूलों की इच्छा रखता इंसान ।
पाप को रोज कमाता इंसान, पुण्य की इच्छा पालता इंसान ।
मन्दिर और मस्जिद जाता इंसान, श्मशान को फिर भी न पहचानता इंसान
रोज अपनी कब्र बनाता इंसान, फिर भी जिन्दा रहता इंसान ।
गम की आग में जलता इंसान, फिर भी हंसता-खेलता इंसान ।
यह आज का इंसान, मन-मस्तिष्क से मृत इंसान ।

—झा सरीन

पासपोर्ट डिवीजन

परराष्ट्र मन्त्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली

अनेकता और साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिए शुद्धि का मंत्र सबल स्वर से गूंजना चाहिए।

आपस की फूट मिटा कर एकता के मंत्र का पाठ सब करें, गद्दी और पद का मोह छोड़ कर हम धर्म के लिए जियें और मरें।

श्रद्धा-आदर-स्नेह से जीवन को ज्योतित करो। वेद की उज्ज्वल पताका भूमंडल पर फहराए। सभी धर्म मन्दिरों में 'ओ३म्' का नाद गूंजे और हम शहीद श्रद्धानन्द के बलिदान का मूल्यांकन कर आगे बढ़ें यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है।

—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरदार वल्लभ भाई पटेल

—बलराज मधोक, पूर्व सांसद नई दिल्ली

दुर्बल नेतृत्व आज भारत के गहराते संकट का एक बड़ा कारण है। आज देश को सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे निर्भिक, चरित्रवान् और दृढ़-संकल्प वाले नेता की आवश्यकता है। ज्यों-ज्यों स्थिति बिगड़ रही है, सरदार पटेल जैसे नेता की आवश्यकता अधिकाधिक महसूस हो रही है।

आज जब देश की एकता और सुरक्षा के लिए अन्दर और बाहर से खतरे पैदा हो रहे हैं, विचारशील देशभक्तों का ध्यान बरबस सरदार वल्लभभाई पटेल की ओर जाता है। लोग महसूस करने लगे हैं कि आज हिन्दुस्थान को सरदार पटेल जैसा नेता चाहिये।

स्वतन्त्रता के बाद जिन नेताओं ने खंडित हिन्दुस्थान के निर्माण और उसके चिन्तन को दिशा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है, सरदार पटेल उनमें अग्रणी हैं। १५ दिसम्बर १९५० को जब उनका निधन हुआ, उस समय और उसके कुछ समय बाद तक भी बहुत-से लेखकों, इतिहासकारों और राजनैतिक नेताओं ने सरदार पटेल की उपेक्षा की, परन्तु ज्यों ज्यों समय बीतता गया, सरदार पटेल अपने समकालीन नेताओं में सर्वोत्तम माने जाने लगे हैं। तुलनात्मक अध्ययन से उनका काम और नाम अधिकाधिक चमकने लगा है।

सरदार पटेल देश को जो उत्कृष्ट नेतृत्व दे पाये उसके पीछे उनका चरित्र और चिन्तन भी था और उनके नेतृत्वसंबंधी गुण भी।

सरदार पटेल सही अर्थों में धरती पुत्र थे। उनके पिता गुजरात के साधारण किसान थे। सरदार पटेल की माता का उनके बाल्यकाल में ही निधन हो गया था। इसलिए वल्लभभाई को बचपन से ही एक निर्धन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करना पड़ा। वे भोजन बनाते, बर्तन साफ करते, कपड़े धोते, खेती में पिता का हाथ बँटाते और साथ-साथ पढ़ते भी थे। इस प्रकार का संघर्षमय जीवन व्यतीत करते हुए उन्होंने बीस वर्ष की उम्र में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर एक वकील के साथ कुछ महीने सहायक के रूप में काम करने के उपरान्त वकालत की सनद प्राप्त की और वे वकील बन गये। कुछ धन कमाने के बाद ब्रिटेन जाकर बैरिस्टर बन गये। उनकी गणना गुजरात के प्रमुख वकीलों में होने लगी और वे अहमदाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये। गांधी जी के प्रभाव में आने के बाद उन्होंने वकालत छोड़ दी और वे स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। बारडोली सत्याग्रह में उनके संगठन और नेतृत्व के गुण पहली बार खुलकर सामने आये और वे जनता द्वारा "सरदार" कहे जाने लगे।

सरदार वल्लभभाई पटेल की उपरोक्त पृष्ठभूमि, उनके बचपन और यौवन काल के अनुभव, विशिष्ट स्थान बनाकर देश की सेवा के लिए सब कुछ छोड़ देना आदि गुणों का उनके चरित्र और चिन्तन पर प्रभाव पड़ा।

उनका आत्मविश्वास और यथार्थवादी राष्ट्रवादी दृष्टिकोण उनकी विशेषता बन गये।

अंग्रेज हिन्दुस्थान को दो भागों में ही नहीं, अनेक भागों में बांटना चाहते थे। पांच सौ देशी राज्य विशेष रूप से हैदराबाद, भोपाल और ट्रावनकोर-कोचीन उनके विशेष प्रभाव में थे और स्वतंत्र राज्यों के रूप में अपना अलग अस्तित्व कायम रखना चाहते थे। अपनी विशेष परिस्थितियों के कारण जम्मू-कश्मीर राज्य को संभालना एक अलग समस्या थी। इसे और हैदराबाद को सीधे अपने अधिकार क्षेत्र में रखकर प्रधान मन्त्री पं. नेहरू ने सरदार पटेल के लिए कठिनाइयां पैदा कर दी थीं। वे जानते थे कि उन राज्यों के प्रति अपनाई गई नीति का कुप्रभाव शेष देशी राज्यों पर पड़ेगा। हैदराबाद तो लगभग हाथ से निकल ही गया था। उसे अलग स्वतंत्र राज्य के रूप में मान्यता देने के लिए ब्रिटिश शासन तैयार बैठी थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु जब केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने हैदराबाद का मामला प. नेहरू के हाथ से लेकर सरदार पटेल को सौंपने का फैसला किया, तब सरदार पटेल ने हैदराबाद के मामले में जिस दृढ़ता, दूरदर्शिता और राष्ट्रीय दृष्टिकोण का परिचय दिया, उसने खंडित हिन्दुस्थान को एक बड़े संकट से बचा लिया। यदि उन्हें कश्मीर का मामला भी सौंप दिया गया होता तो वे इसका भी राष्ट्रहित के अनुकूल निपटारा कर जाते।

तिब्बत के संबंध में भी सरदार पटेल का दृष्टिकोण समय की कसौटी पर ठीक सिद्ध हुआ है। पं. नेहरू ने तिब्बत को चीन का हिस्सा मानकर और बढ़ते चीनी सेनाओं के प्रवेश का विरोध न करके हमारी समस्त उत्तरी सीमा को असुरक्षित बना दिया। कश्मीर की तरह तिब्बत के मामले में भी भारत को देर या सवेर अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सरदार पटेल द्वारा प्रतिपादित दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा।

दुर्बल नेतृत्व आज भारत के गहराते संकट का एक बड़ा कारण है। आज देश को सरदार पटेल जैसे निर्भीक, चरित्रवान् और दृढ़ संकल्प वाले नेता की आवश्यकता है। ज्यों-ज्यों स्थिति बिगड़ रही है सरदार पटेल जैसे नेता की आवश्यकता अधिकाधिक महसूस हो रही है—सरदार पटेल की प्रासंगिकता बढ़ रही है।

दान महिमा

दसवीं कम ई विद्या में जो दान देता है,
बदले में उसको चौगुना भगवान् देता है।
देखो तो आप रोज घाट नहर कुएं पर,
पनघट लगा रहता है आठ पहर कुएं पर।
रहटों से पानी खींचकर किसान देता है,
घटती न बूंद कुआ यह प्रमाण देता है ॥१॥
दुनिया में पूजा किसको होती आज भाइयो,
जिसने किया था दान सारा राज भाइयो।
पुत्र पत्नी बेच यह ऐलान देता है,
जिसकी गवाही काशी का श्मशान देता है ॥२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कवयित्री की ओर से दो शब्द

सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद

जनज्ञान के नवम्बर मास के विशेषांक में सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद प्रकाशित किया गया था। पद्यानुवाद के बारे में प्रस्तोत्री के विचार लेख में पढ़िये।

प्रभु सामवेद की स्तुतियाँ मैं काव्य बद्ध स्वर बद्ध करूँ,
जो सुने मुग्ध हो जाये वहीं तेरी भक्ति में आबद्ध करूँ।

हे प्रभो, तुम मेरे हृदय की साध, सुषमा और चिरन्तन सौन्दर्य हो। मैं जान ही न सकी कि अनायास मुझे तुम से कब लेखनी मिली और तुम कब उसमें आकर बस गये। प्रभो, सत्य कहती हूँ कि मेरा हृदय तुम्हारे गूढ़ रहस्य और दिव्य आनन्द का उन्माद लिये तुम्हारे स्वरूप (ओ३म्) की ही परिक्रमा किया करता है। मेरे जड़ शरीर पर अपना चैतन्य बिखेरकर तुमने ही मुझसे सामवेद का काव्यानुवाद करवाया। गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है कि वेदानां सामवेदोऽस्मि (वेदों में मैं सामवेद हूँ।) मुझ सा सौभाग्य शाली कोई क्या होगा ?

तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि मुझ पर पड़ी। कब, किस पर और किस रूप में परमात्मा की अनन्य कृपा हो जाये, नहीं कहा जा सकता।

मुझे कविता लिखने की प्रेरणा अपने पूज्य पिता स्वर्गीय डाक्टर सुरेन्द्रनाथ से मिली। विचार दिये मेरी पूज्या माता स्वर्गीय प्रकाशवती जी ने। विवाह होने पर मैं मेरठ आई। एम. ए. किया। पढ़ने-लिखने में रुचि थी। मेरे पितृतुल्य श्वसुर श्री सोम प्रकाश जी ने नई दिल्ली के दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित चारों वेदों का भाष्य आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व ही मंगवा लिया था। कभी-कभी मैं भी इसे पढ़ लेती थी। पढ़ते-पढ़ते मुझे वेदों पर शोध कार्य करने का विचार आया। बाद में यह विचार उठा कि सामवेद का काव्यबद्ध अनुवाद किया जाये। ईश्वर की कृपा से दोनों कार्य पूर्ण हुए। अब मैं अपने काव्यमय अनुवाद को स्वरबद्ध करने में लगी हूँ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों पर शोध का मेरा विषय था "वेदों में राजनैतिक व्यवस्था"। काव्यबद्ध अनुवाद मैंने ५ जनवरी सन् १९८५ को प्रारम्भ किया। प्रथम जुलाई सन् १९८७ को इसकी पूर्णाहुति हुई। बीच में परिस्थितियों से पराजित होकर छह महीने तक यह कार्य बन्द भी किये रखा। अनुवाद में आपको जो त्रुटियां दिखाई दें, उन्हें मेरी समझ लें और जो अच्छाइयां दिखाई दें, उन्हें ईश्वर का वरदान मान लें।

मैं दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष और लोकप्रिय हिन्दी मासिक जनज्ञान की सम्पादिका पूज्या पंडिता राकेशरानी जी के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। यदि मुझे उनकी अनुकम्पा न मिली होती तो मेरी कल्पना साकार न होती। उनकी कृपा का परिणाम आप के समक्ष है— यह दिव्य ग्रन्थ आपके हाथों में है।

अपना संक्षिप्त परिचय भी दे दूं। मेरा जन्म सात अक्तूबर सन् १९५३ (शरत् पूर्णिमा के दिन शुक्रवार को) पूरनपुर (जिला पीलीभीत) में हुआ। मेरे पिता पीयूषपाणि चिकित्सक थे। संस्कृत में कविता किया करते थे। माता जी परमविदुषी, कर्त्तव्यपरायण, आस्तिक, सत्यान्वेषी और कर्मठ देवी थीं। उन्हें पूरी गीता कण्ठस्थ थी। पूरनपुर के आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण मेरे दादा श्री मूलचन्द जी ने करवाया था। मैं एक ओर माता जी के साथ गीता, उपनिषद् और गोरखपुर की धार्मिक पत्रिका कल्याण पढ़ा करती थी और दूसरी ओर आर्यसमाज मन्दिर से आने वाली वेदमन्त्रों की ध्वनि मेरे चेतन और अवचेतन मन पर अपना प्रभाव डालती थी। रही-सही कसर दयानन्द संस्थान के साहित्य ने पूरी कर दी और मुझे वेद वाणी गुंजाने का अवसर मिला।

मैं परमपिता परमात्मा का बारम्बार धन्यवाद करती हूँ कि उसकी अनुकम्पा से काव्यबद्ध अनुवाद का यह यज्ञ पूर्ण हुआ। परमात्मा की कृपा होगी तो मैं अन्य वेदों का काव्यबद्ध अनुवाद भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करूंगी।

मृदुल कीर्ति
व्हाइट हाउस, निगार सिनेमा के सामने, मेरठ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तरह-तरह के अचार

कैरिया, कैरी, चने का अचार

सामग्री १ किलो कैरिया, १५ कैरी बड़ी साइज की ५०० ग्राम काबली चना, २ बड़ी चम्मच हल्दी, २ बड़ी चम्मच मेथी, ३ बड़ी चम्मच सौंफ; १ बड़ी चम्मच मंगरैला, ६ बड़ी चम्मच लाल मिर्च, १/३चम्मच हींग, १ किलो सरसों का तेल।

विधि : कैरिया को धोकर १५ मिनट धूप में सुखा लें। कैरी को छील कर कस लें। काबुली चना साफ कर लें। इन्हें कैरी में मिला लें। १ किलो पर १२५ ग्राम नमक के हिसाब से तीनों के तोल के अनुसार नमक डालें। मेथी और सौंफ दल कर सेंक कर मंगरैला डाल दें। हींग सेंक कर पीस कर डाल दें। मिर्च, हल्दी भी मिला दें। तेल गरम करके ठंडा करके मिला दें। इसे २-३ दिन धूप में रखें। अचार तैयार मिलेगा।

प्याज और आम का अचार

सामग्री : आधा किलो आम काटने और सुखाने के बाद आधा किलो छोटी मोतिया प्याज, २५० ग्राम नमक, ४ बड़ी चम्मच लाल मिर्च, ४ बड़ी चम्मच मेथी, ४ बड़ी चम्मच सौंफ १ बड़ी चम्मच मंगरैला, २ बड़ी चम्मच सरसों, डेढ़ बड़ी चम्मच हल्दी १ चुटकी हींग, ३-४ तेज पत्ता, २५० ग्राम सरसों का तेल।

विधि : आम को १/२" के टुकड़े कर लें। प्याज को छील लें। दोनों को मिलाकर २ चम्मच नमक, १ चम्मच हल्दी मिलाकर रात भर के लिए छोड़ दें। सुबह इसका पानी निकाल कर १५-२० मिनट धूप में फैला कर सुखा लें। मेथी, सौंफ, सरसों, अलग अलग सुखा कर एवं भून कर मोटा दरदरा पीस लें। तेल खूब गर्म करने के बाद ठंडा करके हींग एवं तेज पत्ता का छौंक देकर आम प्याज में डाल दें। दो दिन धूप देने के बाद अचार खाने के लिए तैयार हो जाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आलू का अचार

सामग्री : १ किलो छोटे आकार के आलू, ५० ग्राम अदरक, ५० हरी मिर्च, ५० ग्राम नमक, ५० ग्राम पिसी राई, ३ बड़ी चम्मच लाल मिर्च, १-२ बड़ी चम्मच हल्दी, २०० ग्राम सरसों का तेल।

विधि : आलू उबाल कर छील कर रख लें। अदरक छील कर महीन काट लें। हरी मिर्च डण्ठी तोड़ कर महीन काट लें। आलू, मसाले और तेल मिलाकर २-३ दिन धूप में रख लें।

परवल का अचार

सामग्री : १ किलो परवल (बहुत कच्चा नहीं) २ चम्मच नमक, २ चम्मच मिर्च, २ चम्मच पीसी हुई राई, १/२ चम्मच हल्दी, ३ बड़ी चम्मच सरसों का तेल।

विधि : परवल को उबाल लें। दोनों ओर के किनारे काट कर चीर लें। थोड़ा पानी निचोड़ कर सब मसाला मिला कर परवल में भर लें। तेल गरम करके ठंडा करके मिला दें। दो दिन धूप में रखें। यह अचार ज्यादा नहीं ठहरता। खाने में खूब स्वादिष्ट लगता है।

आम तिल का अचार

सामग्री : १ किलो आम काटने और सुखाने के बाद, ३ बड़ी चम्मच सफेद तिल, २५ ग्राम नमक, ४ बड़ी चम्मच लाल मिर्च, २ बड़ी चम्मच सरसों, ४ बड़ी चम्मच मेथी, ४ बड़ी चम्मच सौंफ, १/२ बड़ी मंगरैला, १ बड़ी चम्मच हल्दी, २५० ग्राम तिल्ली के तेल।

विधि : आम को काट कर १ बड़ी चम्मच नमक १/२ बड़ी चम्म हल्दी लगाकर रात भर के लिए छोड़ दें। सुबह आम का पानी निकाल क १५-२० मिनट धूप में फैला कर सुखा लें। मेथी सौंफ़ सरसों अलग-अलग भूनकर मोटा दरदरा पीस लें।

तिल अलग से हल्की आंच पर गुलाबी भून ल। इसमें सब मसाले मिला ले तेल गरम करके ठंडा करके इसमें मसाले और आम डाल दें। दो दिन धूप देने के बाद आम खाने के लिए तैयार हो जाएगा।

—विनीता मोदी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्य

—अभयदेव विद्यालंकार

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि ।
तच्छकेयं तन्मे राध्यतामिदमहमनृतात्सत्य मैमि ॥

एक बार एक विद्वान लेखक ने ऋषि दयानन्द पर लिखने के लिए 'सत्य का दूत' यह अतीव उपयुक्त शीर्षक दिया था। सचमुच दयानन्द सत्य का संदेश लेकर ही संसार में आये थे। उन्होंने दुनिया में जहां कहीं असत्य देखा उसका खण्डन किया और जहां जो सत्य देखा वह जरूर कहा, फिर चाहे सब संसार उनसे नाराज हो जाये, लोग ईंटे बरसाये या जहर भी दे दें। उन्हें सत्य प्यारा था सदा प्यारा था। और सत्यस्वरूप परमात्मा में उनकी भक्ति थी। सत्य और श्रद्धा बहुत नजदीकी वस्तुएं हैं। सत्य में विश्वास का नाम ही श्रद्धा है। इसलिए श्रद्धालु दयानन्द स्वभावतः "सत्य के दूत" हुए और जगत् में ईश्वरीय संदेश फैला गए। सत्यार्थ का प्रकाश करना ही एक मात्र उनका जगत में उद्देश्य था। उनके आर्यसमाज में उनके इस महान् संदेश का अनुसरण करने के लि प्रविष्ट हुए हैं। वे जो हमारे लिए खजाना छोड़ गए हैं उसमें ए चमकता हुआ अनमोल हीरा यह है—

"सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'

यह सबने जगत् पटल सत्य नियम से चल रहा है। सब सत्य स्वरूप तक सत्यमार्ग से ही पहुंचना है। इसीलिए उपनिषद में कहा है—

सत्यमेव जयते नानृतम्। सत्येन पन्था विततो देवयानः ॥

और इसलिए सत्य सबसे बड़ा धर्म है। सब पुण्य कार्य सत्य में समा जाते हैं और सब अधर्म और सब पाप 'असत्य' या 'अनृत' इस शब्द से समझे जा सकते हैं। क्योंकि धर्म और अधर्म अटल सत्य नियमों का पाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

लन करना और तोड़ना है । जब हम सत्य व्यहार करते हैं तब जगत् की सब शक्ति हमारी पीठ पर होती है, हमारे अनुकूल होती है और जब हम थोड़ा-सा भी असत्य करते हैं, चाहे हम न जाने, तब हम महान् शक्ति को ललकारते हैं और स्वाभावत: दु:ख पाते हैं । जो है वह सत्य है और जो है नहीं वह असत्य है, तो सत्य के विपरीत आचण करना व्यर्थ में अपना सिर शिला से टकराना है । यदि हम इस इतनी स्पष्ट बात को समझ जायें तो हम कभी भी असत्य बोलना न चाहें, कभी भी असत्य न सोचें और कभी असत्य न करें ।

संसार में अवश्य धोखे से भी सफलता मिलती दिखाई देती है । परन्तु यह सफलता क्षणिक होती है और असल में अवास्तविक होती हैं । फिर भी यह जितनी सफलता दिखाई देती है वह इसलिए होती हैं कि असत्य सत्य का रूप धर आया होता है । कोरे नंगे असत्य से किसी को धोखा नहीं दिया जा सकता । यदि सत्य का रूप धरने से ही कुछ क्षणिक सफलता मिलती है तो असली सत्य द्वारा ही क्यों न चिरस्थायी सफलता प्राप्त की जाये । इस धोखे से मनुष्य को सदा बचना चाहिए ।

यह ठीक है कि सत्य का जानना कठिन है परन्तु यह तभी तक है जब तक सत्य से प्रेम नहीं होता । जिसे सत्य की लगन है, यही जिसके लिए दुनिया में एकमात्र चीज है उसके पास तो सत्य प्रेमीजन की तरह भागा आता है । उसके लिए सत्य बड़ा आसान हो जाता है यह तो बात प्रेम की है सत्य में अपना प्रेम पैदा कीजिए, सत्य से अपना अटूट नाता जोड़ लीजिए । यह एक ही वस्तु हमें हमारे उद्देश्य तक पहुंचाने के लिए पर्याप्त है ।

अंत में मैं एक सत्य के पुजारी महात्मा (गांधी) के सत्य विषयक कुछ वचन उद्धृत करता हूं और आशा करता हूं कि जैसे मुझे उन वचनों के पढ़ने से सत्य के लिए उत्साह मिला है वैसे ही पाठकों को भी प्राप्त होगा ।

"कहते हैं कि एक न्यायाधीश ने प्रश्न किया कि 'सत्य क्या है ।' उसका उत्तर उसे नहीं मिला । पर हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार सत्य के लिए हरिश्चन्द्र ने सर्वस्व अर्पण कर दिया और खुद स्त्री-पुत्र सहित चाण्डाल के हाथ

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिक गये, इमाम हसन और हुसैन ने सत्य की खातिर अपने प्राण तक दे दिये ऐसा होते हुए भी उस न्यायाधीश को जवाब नहीं मिला कि 'सत्य क्या है'।

"हरिश्चन्द्र जिसे सत्य समझते थे उसके लिए तरह-तरह के संकट सह कर अमर हो गये। इमाम हुसैन ने जिसे सत्य जाना उसके लिए अपना प्यारा देह तक खो दिया पर हरिश्चन्द्र और इमाम हुसैन का जो सत्य था वह हमारा सत्य हो या न भी हो। क्योंकि हर एक व्यक्ति का सत्य परिमित अथवा सापेक्ष सत्य होता है।"

पर इस परिमित सत्य के बाद शुद्ध निरपेक्ष सत्य तो है ही जो अखण्ड और सर्व व्यापक है। यह अवर्णनीय है, क्योंकि सत्य ही तो परमेश्वर है अथवा परमेश्वर ही तो सत्य है।"

"इसलिए जिसने सत्य के सच्चे स्वरूप को पहचान लिया है—जो काया वाचा मनसा सत्याचरण ही करता है उसने परमात्मा को पहचान लिया है।"

★ दुष्टों की संगति विधाता कभी न कराये। इससे तो नरक का निवास ही अच्छा।

★ कटु वचन पर नियंत्रण रखना आवश्यक है, इस नियम का पालन करना चाहिए कटु बोलने वाला जगत् में सभी प्राणियों का दुश्मन होता है।

★ ज्ञान दीप का प्रकाश होने पर अज्ञान के सब बन्धन नष्ट हो जाते हैं।

★ अनुभव और अहंकार जब तक साथ साथ रहेंगे तब तक ज्ञानी और मूर्ख में कोई भेद नहीं।

★ भूखों और नंगों को आदरपूर्वक खिलाना-पिलाना एक श्रेष्ठ यज्ञ है।

★ प्रभो! मैं तुमसे ऐसे प्रेम करूँ जैसे गाय अपने बछड़े से, कंजूस अपने धन से, और मछली जल से करती है।

★ वृक्ष अपने काटने वालों को भी छाया, फल और लकड़ी देता है।

★ नित्य कलह (आपसी क्लेश) से महल उजड़ जाते है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाई

—सत्यपाल सक्सेना

'दो मिनट, मैं जरा अपने भाई से भी मिल लूँ। अंकुश ने प्रार्थना के लहजे में कहा तो मुझसे इनकार करते नहीं बना।

हम दोनों उसके भाई के दफ्तर की ओर मुड़ गये।

अंकुश ने इससे पहले मुझे अपने भाई के बारे में बताया था। आज बता रहा था—यह उसका सबसे बड़ा भाई था। अंकुश के जन्म के समय वह विदेश में पढ़ रहा था। वहीं से शादी करके दिल्ली लौटा। घर से तभी अलग हो गया था। फिर तरक्की करते-करते वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के एक उद्योग समूह का प्रबंधक हो गया।

अंकुश उसी के पास अपनी नौकरी की सिफारिश का जुगाड़ बैठाने जा रहा था।

बाप रे! क्या आलीशान दफ्तर है उसके बड़े भाई का। जिस लिफ्ट से पांचवीं मंजिल पर जाना था वह भी एयरकंडीशंड थी। पश्चिमी संगीत की हल्की-हल्की धुन भी चल रही थी। लिफ्ट से लेकर उसके कमरे तक कालीन बिछा हुआ था। गलियारों में सुन्दर-सुन्दर पौधों के गमले और दीवारों पर बेश कीमती पेंटिंग्स। सेंट की खुशबू से भरा था गलियारा।

कमरा खोल, जैसे ही वे अन्दर घुसे यैस प्लीज!' महाप्रबन्धक की सेक्रेटरी ने पूछा।

'मैं मिस्टर अमिताभ मेहता का छोटा भाई हूं, उनसे मिलना है मुझे।' सेक्रेटरी ने अंकुश के बाबूनुमा पहनावे को ऊपर से नीचे तक देखा। जैसे उसे विश्वास न हो रहा हो।

'आप प्लीज बैठिए, मैं अभी फोन पर उन्हें बता देती हूं।' उसकी आवाज खोखली थी।

'सारी मिस्टर सेक्रेटरी ने क्रेडिल पर फोन रखने के पश्चात कहा,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'सर अभी 'बिजी' हैं। आपको इन्तजार करना पड़ेगा।'

हम दोनों सेक्रेटरी कमरे के सामने रखे गद्देदार सोफों पर चुपचाप बैठ गए।

करीब एक घंटे की प्रतीक्षा के बाद जब अंकुश के भाई कमरे से बाहर आए तो उनके साथ गोरो चमड़ी वाले दो तीन लोग थे। सबको गलियारे तक छोड़ने के बाद वे वापस आए तो अंकुश ने उनके पांव छू लिए।

'हां, बोलो क्या बात है?' बड़े भाई साहब अंकुश से बात करने की बजाय अपने कमरे में घुस जाने की जल्दी में ज्यादा थे।

जल्दी-जल्दी में जो कुछ बताया जा सकता था, अंकुश ने बता दिया था।

'अच्छा, ठीक है, मैं चेयरमैन से बोल दूंगा।' कहकर अन्दर चले गए।

उस रोज अंकुश बहुत प्रसन्न था। 'जरा डाकखाने तक मेरे साथ चलो।' जब हम सड़क पर आ गए तो अंकुश ने मेरी कोहनी खींचते हुए कहा।

'मगर क्यों?

'चल तो सही।'

'कुछ बताएगा भी?'

'दरअसल आज मेरे बड़े भाई साहब ने जिंदगी में पहली बार इतना समय देकर मेरी बात को सुना है। आज मैंने उनके प्यार और अपनत्व के कुछ महान् क्षणों को पहली बार जिया है। इससे पहले कि उनकी नजर में मैं कृतघ्न हो जाऊं मैं उन्हें धन्यवाद का पत्र भेज देना चाहता हूं। ★

★ जो धन कमाने से इन्कार करता है, यदि वह आलसी नहीं है तो देवता है।

★ अपनी मूर्खता की बात दूसरों से कहना केवल बेवकूफी है।

★ यदि तुम चाहते हो कि मरने के बाद लोग तुम्हें भूलें नहीं तो या तो पढ़ने लायक बातें लिखो या लिखने लायक काम करो।

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिगरेट-बीड़ी की लत बहुत बुरी है

भारतीय उप महाद्वीप, चीन, सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के देशों में फेफड़े के कैंसर से मरने वाले लोगों की तादाद बढ़ती जा रही है।

इसका मुख्त कारण है धूम्रपान। ये विचार इंग्लैंड के मशहूर डाक्टर कीथ वाल के हैं। धूमपान की रोकथाम के सम्बन्ध में आयोजित एक कार्यशाला में उन्होंने कहा—दुनिया में हर साल दस लाख नए लोग फेफड़े के कैंसर का शिकार होते हैं। 13-14 वर्ष के बाद यह संख्या 20 लाख प्रति वर्ष हो जाएगी।

उन्होंने कहा—अमरीका में औरतों को स्तन कैंसर अधिक होता है। अन्य पश्चिमी देशों में फेफड़ों का कैंसर स्त्रियों को भी हो रहा है।

आज अमेरिका में सवा पांच करोड़ से अधिक लोग सिगरेट पीते हैं। इनमें बुद्धिजीवी भी हैं, जो सिगरेट से होने वाली हानियों को जानते हुए भी उसके गुलाम हैं।

अनुसंधान से पता चला है कि तम्बाकू का नशा हेरोइन, कोकीन और अन्य मादक पदार्थों से भी बड़ा है। यदि करोड़ों लोग धूम्रपान छोड़ दें तो हर वर्ष लाखों जानें बच सकती हैं। तम्बाकू के कारण बीमार होने वाले लोगों के इलाज का खर्च अमेरिका में करीब 80 करोड़ रु. प्रतिदिन है।

सिगरेट के खतरनाक पहलुओं पर 1984 में जारी एक रिपोर्ट के बाद अमरिका में साढ़े तीन करोड़ लोगों ने सिगरेट पीना बंद कर दिया था। लेकिन इधर बड़े-बूढ़े धूम्रपान छोड़ रहे हैं तो उधर सिगरेट पीने वाले नौजवानों की संख्या बढ़ रही है।

20 साल पहले जब पहली बार तम्बाकू से होने वाले नुकसान के बारे में पहली रिपोर्ट छपी तो कई विशेषज्ञों का मानना था कि सिगरेट पीने की लत बिल्कुल वैसी ही है जैसी किसी को मूंगफली खाने की आदत हो। लेकिन बाद के अनुसंधानों से पता चला कि सिगरेट में मौजूदा निकोटीन तन-मन पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभाव डालती है। अब पता चला है कि दूसरे नशों की तरह निकोटीन भी दिमाग पर असर करती है और पीने वाले को गुलाम बना देती है।

हेरोइन के अभ्यस्त लोगों का कहना है कि हेरोइन के मुकाबले सिगरेट छोड़ना कहीं ज्यादा मुश्किल है। धूम्रपान का अभ्यस्त यदि सिगरेट-बीड़ी पीना छोड़ दे तो बेचैन, परेशान और चिड़चिड़ा हो जाता है। उसे नींद नहीं आती लेकिन दिन में भी ऊंघता रहता है। धूम्रपान छोड़ने पर कुछ लोगों को सिर दर्द रहने लगता है या हाजमा खराब हो जाता है।

निकोटीन अन्य मादक पदार्थों से बहुत भिन्न है। इसका असर बड़ी जल्दी होता है। निकोटीन सात सैकिंडों में दिमाग में पहुंच जाती है और सिगरेट-बीड़ी खत्म होते-होते दिमाग पर छा जाती है। जिगर जब इसे साफ कर देता है या पेशाब के जरिये निकोटीन निकल जाए तो उसका प्रभाव भी जल्द खत्म हो जाता है। आधे घंटे के बाद फिर धूम्रपान की जरूरत पड़ती है।

निकोटीन से सतर्कता बढ़ती है, दिमाग शांत भी होता है। हल्का कश लेने से सिगरेट पीने वाले को ताजगी महसूस होती है और गहरा कश लेने से उसे अजीब शांति महसूस होती है। धूम्रपान करने वाले का शरीर जानता है कि उसे निकोटीन कब और कितनी चाहिए। आमतौर पर आम लोगों का काम दस सिगरेट प्रतिदिन से चल जाता है। लेकिन रात की नींद के बाद सुबह फिर निकोटीन चाहिए। कुछ लोग रात की कमी दूर करने के लिए सुबह-सवेरे दो-तीन सिगरेट पीते हैं।

अध्ययनों से पता चला है कि नियमित रूप से धूम्रपान करने वाले लोगों की स्मरणशक्ति, एकाग्रता और बौद्धिक कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। लेकिन यह पता नहीं चला कि सिगरेट न पीने वालों पर ये प्रभाव होते हैं या नहीं।

सिगरेट-बीड़ी से होने वाले नुकसान जानलेवा हैं। धूम्रपान करने वाले के दिल की धड़कन बढ़ जाती है और बढ़ी रहती है। धीरे-धीरे इसका असर दिल के दूसरे हिस्सों पर पड़ता है। धूम्रपान करने वाले व्यक्ति का वजन नहीं बढ़ता क्योंकि उसे भूख कम लगती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धूम्रपान छुड़ाने के लिए अमेरिका में निकोटीनयुक्त टाफी बनाई गई है। इसके खाने से करीब 10 लाख लोगों को सिगरेट छोड़ने में मदद मिली है। अमेरिका और पश्चिमी देशों में धूम्रपान के दुष्प्रभावों से सरकार काफी चिन्तित है। सिगरेट के खिलाफ धुआंधार अभियान चलाए जा रहे हैं। सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर रोक लगा दी गई है। कई दफ्तरों और कारखानों में धूम्रपान न करने वाले कर्मचारियों को अतिरिक्त बोनस दिया जाता है। इसके अलावा पुस्तिकाओं, पोस्टरों और फिल्मों के जरिये लोगों को सिगरेट से होने वाले नुकसान बताए जा रहे हैं। अधिकतर देशों में सिगरेट पर भारी टैक्स लगा कर उसे इतना महंगा किया जा रहा है कि वह आम आदमी की पहुंच से बाहर हो जाए। ★

अर्चना हो।

—राकेश रानी

आज उनकी अर्चना हो।
जो जले दिन-रात हर पल धर्म की ही याद में,
आज उनकी अर्चना हो।
जो मिटे, आगे बढ़े निज शीश हथों में लिए,
घोर संकट में लड़े जो 'प्राण' पाने के लिए।
आज युग के बाद उनकी दीप-मानस वंदना हो॥
आज उनकी अर्चना हो।
देख पाए जो नहीं आंसू किसी की आंख में,
एक भी सूखे न पत्ता राष्ट्र की मधु शाख में,
ध्ये लेकर जो चले, वह चाल उनकी बन्दना हो॥
आज उनकी अर्चना हो।
जो बने थे बाद जन हित, पुण्य मानवता रहे,
स्वप्न हो साकार सारे, हम रहे या ना रहें।
उन शहीदों के लिए प्रिय आज पावन अर्घ्य क्या हो।
आज उनकी अर्चना हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मप्रचार यज्ञ में पांच-पांच रुपयों की आहुति डालने वाले सदस्य

सत्यदेव नई दिल्ली, रामस्वरूप शर्मा मुरादाबाद, गंगा प्रसाद सुमन दिल्ली, उमा एस. कशातवर कधार, शिवदान सिंह दिल्ली, वामदेव गुप्त ऊधमपुर, बुद्धिलाल राम लखन बस्ती, हरनारायण लाल आर्य शोहरतगढ़ (बस्ती), देवेन्द्र कुमार गुप्त गंगापुर सिटी, उदयनारायण भगत भागलपुर, ज्योति प्रसाद भरथरा, रामसिंह आर्य बिजनौर, छोड़ मिस्त्री गया, जयेश एम. शाह नवसारी, पीताम्बरराम कोल्हे कसलदा, हरद्वारी लाल रामनाथ गुप्त सिकन्दराबाद, कन्हाई लाल चौरी वैशाली, गोविन्दराव लतूर, सूर्यकान्त व्यंकुल राव गुलवर्गा, लक्ष्मी नारायण विदिशा, डा. ईश्वर सिंह आर्य अम्बाला, मातादीन रामभरोसे अग्निहोत्री हरदोई, एन. एस. पुरबिया बड़ोदा, पन्नालाल कश्यप मन्दसौर, शिवचरण दास आर्य मेरठ, नारायण सिंह आर्य बुलन्दशहर, संजय कुमार अवस्थी सीतापुर बोध भैरवानन्द चित्तौड़, बी. के. गुप्त अलीगढ़, डा. आई. एस. उप्पल चण्डीगढ़, श्री भारतसिंह महुआखेड़ा, विजय प्रकाश कम्माउण्डर महुआखेड़ा, प्यारेलाल वर्मा महुआखेड़ा, चौधरी भोजराज सिंह वीरपुर, सरदार गुरुदीप सिंह महुआखेड़ा, डा. रामदीश पिपल गांव, रमाशकर त्रिवेदी महुआखेड़ा, नरेन्द्र विजय मुकर्जी गिरीडीह, यशपाल आर्य बदायूं, राधाकृष्ण खण्डेलवाल चित्तौड़गढ़, रमणलाल पाली, श्रम. बी. विन्देल जलगांव, रामानुज सिंह भोजपुर, चतुरधर गोप सिंहभूमि, शिवप्रसाद नागौर, शकरराव बीड़, क्षेमानन्द शास्त्री अल्मोड़ा विष्णु गोपाल विनोद कुमार बिजनौर, रामस्वरूप इन्दौर, रामप्रकाश पाण्डेय इलाहाबाद, मुकुन्दमणि पश्चिमी चम्पारण, बाबूसिंह कुशवाहा गुना, गजपतराय श्रीवास्तव जालौन, मनोहर सिंह जी नैनीताल, परशुराम शुक्ल हरदोई, रामलखन यादव गोआ, घनश्यामदस आर्य बरेली, रामनारायण सीताराम दार्जीलिंग, आ. सु. नारायण राव बंगलौर, रामाश्रय पाण्डेय रायबरेली, सत्यनारायण प्रसाद चम्पारन, धनप्रकाश आर्य मुजफ्फरनगर, शथुरा प्रसाद आर्य नवादा, शत्रुघ्न कुमार आर्य सहरसा, महावीर सिंह सीतामढ़ी, डा. एम. एन. आचार्य बम्बई, वसन्त कुमार शर्मा जयपुर, चन्दूलाल मुरादाबाद, निहाल सिंह निदर्पो रिवाड़ी, धर्मचन्द सुपुत्र ज्ञानचन्द्र गुड़गांव।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोति ताहि बिसार दे आगें की सुध ले

—यशपाल आर्य

भीष्म पितामह का समस्त शरीर बाणों से छलनी हो चुका था। रुधिर की धार बह रही थी। फिर भी पितामह शरशय्या पर शान्त भाव से लेटे थे। पितामह, आपने जीवन में बहुत कुछ देखा है, धर्म के मर्म को आपने समझा है। अब आपका अन्तिम समय आ गया है। हमें धर्म का उपदेश दीजिए। वह मार्ग बताइए जिस पर चलकर हमारा जीवन सुखमय हो जाय और दूसरे जीवन में भी हम सत्पथ के पथिक बन सकें।" कौरवों और पाँडवों की इतनी विनम्र प्रार्थना से पितामह पिघल गये। धर्म का उपदेश देने लगे और प्रश्नों के उत्तर भी।

सहसा बड़े जोर का एक ठहाका गूंज उठा। सब एकत्र, भौचक्के से रह गए। तब भीष्म कर्कश वाणी में बोले "कौन है जिसने यह अट्टहास किया? ठहाका मारकर हंसने वाले को क्या यह भी ज्ञान नहीं कि जब धर्म चर्चा चल रही हो, कई लोग सुन रहे हों, तो इस प्रकार खिलखिलाना असभ्यता है? कौन है वह?" तब एक नारी-कण्ठ उभर कर आया, "बाबा, मैं हूं आपकी पुत्र-वधू द्रौपदी। यह हंसी मेरी थी।', बेटी! तू तो विदुषी है। धर्मशास्त्र और नीतिशील की तू पण्डिता है। तूने यह अनुचित कार्य कैसे कर डाला? तूझे तो हंसना नहीं चाहिये था।"

द्रौपदी ने बड़े विनम्र शब्दों परन्तु उत्तेजित स्वर मे कहना शुरु किया, "पितामह, आपको ध्यान होगा, एक दिन भरी सभा में दुर्योधन ने मुझे अपमानित किया था। मेरे वस्त्र उतारने का उपक्रम किया था। उस दिन सभा में आप भी उपस्थित थे, आचार्य द्रोण भी उपस्थित थे, कृपाचार्य भी थे और वे सब लोग उपस्थित जो धर्म धुरीण और धर्म के आधार समझे जाते हैं। मैं विवश थी। अत्याचारियों के पंजे में थी। मैं चीखी, चिल्लाई, गिड़गिड़ाई। मैंने नाम ले लेकर एक-एक को सहायता के लिए पुकारा, "बाबा, मेरी लाज बचा लो, मैं तुम्हारी पुत्रवधू हूं, तुम्हारी बेटी के समान हूं। मेरा रुदन राजप्रसाद की जड़ भित्तियों से टकराता रहा। न कृपाचार्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठे, न द्रोणाचार्य ने सभाला और बाबा आप मुंह में घुंघनियां डालकर मौन बैठे रहे। और आज जब काल ने आपके द्वार को आ खटखटाया है यमराज के ठंडे हाथों ने जब तुम्हें जंजीरों में जकड़ लिया है तब आपको धर्म का उपदेश सूझा है,।' मैं जानना चाहती हूं आपका धर्मोपदेश मुझ अबला के लिए उस दिन राजदरबार में क्यों नहीं फूटा था ? उस दिन आपके मुख पर ताला क्यों लग गया था ? आज मुझसे पूछा जा रहा है कि तू क्यों ठहाके मार रही है ? यह असभ्यता है। बाबा ! मैं तो आज जी खोल कर अट्टहास करूंगी। धर्म के नाम पर आपका यह समस्त आचरण स्वयं में एक ठहाके से कुछ कम है क्या ?" श्रोता स्तब्ध रह गये पत्थर की मूर्ति से अवाक्।

अन्ततः पितामह ने ही मौन तोड़ा, "बेटी, तू सत्य कहती है। तू ठीक कहती है। मैं उस समय तेरी कुछ भी सहायता करने में असमर्थ था। जो जैसा अन्न खाता है उसका वैसा मन हो जाता है। राजा दुर्योधन का पाप का अन्न खाकर मेरा मन, मेरी बुद्धि, मेरा शरीर, मेरा रुधिर, मेरा सर्वस्व दुर्योधन दास बन गया था। मैं सत्य और धर्म को जानते हुए भी उस मार्ग पर चलने में असमर्थ हो गया था। और आज जब अर्जुन के बाणों ने उस पापमय रुधिर को, अन्न को शरीर से बाहर निकाल दिया है, मैं फिर सत्य समझने, सत्य कहने और सत्य करने के योग्य हो गया हूं।"

तुम्हारे पास जैसा पैसा आयेगा, जैसा अन्न तुम खाओगे वैसा ही तुम्हारा मन हो जायेगा। दुकान पर बैठकर कम तोलो, घी में चर्बी मिलाकर बेचो, दफ्तर में रिश्वत लो, दवाइयाँ नकली बेचो और प्रातः पूजा करके या नमाज पढ़के या तीर्थ यात्रा और हज करके, तुम समझो कि तुम्हारे पाप नष्ट हो जायेंगे ? तुम धर्मात्मा हो गए ? तुम धोखे में हो, यह आत्म-प्रवंचना है। अपने को धोखा देना है।

मैं मर जाऊंगा। बचूंगा नहीं, यह कल्पना करते क्यों हो। कल्पना करो मैं शीघ्र स्वस्थ हो जाऊँगा। मुझे परम पिता परमात्मा ने संसार में अच्छे काम करने के लिए भेजा है। उन पवित्र कर्मों के किए बिना मैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मरूंगा नहीं। मैं तो यहाँ अस्पताल में पड़ा हूं। अच्छे चिकित्सक मेरा इलाज कर रहे हैं। जंगल में पशु पक्षी बीमार होते हैं। उनका इलाज कौन करवाता है? वे भी तो ठीक हो जाते है, फिर मैं क्यों नहीं ठीक हो जाऊँगा? जीवन तुम्हारे कर्मों से जुड़ा है—तुम्हारे भोगों से जुड़ा है। उनसे पहले कैसे समाप्त हो जायेगा?

जिनका मैंने जीवन में अहित किया है, स्वस्थ होकर उनका हित करूंगा। दूसरों के प्रति जलन, इर्ष्या, द्वेष को मन से निकाल दे। तेरे आधे रोग एक दिन में कट जाएंगे।

दूसरों की ब-बेटियों पर तेरी वक्र दृष्टि पड़ती है। देख तू, भी बीबी बच्चों वाला है। जैसा तु दूसरों की बेटियों को देखकर सोचता है, कल दूसरे जब तेरी मां-बहिन-बेटी पर बुरी नजर डालते हैं तो तेरा खून क्यों खौलने लगता है? तेरी आंखों से आग क्यों बरसने लगती है? यह संसार तो गुम्बद की आवाज है। जैसा तू बोलेगा वही प्रतिध्वनि तु सुनेगा। अपनी आंखों को इतना पावन बना ले कि तेरी आंखों में एक बार झांकने वाले के मन का मैल भी कट जाए। यदि कभी मन में पाप वासना उठे भी तो अपनी मां-बहिन और बेटी को स्मरण कर लिया कर, तेरे समस्त पाप जल जायेंगे कल्मष धुल जायेंगे।

तुम विद्यार्थी हो। पढ़ाई में जी नहीं लगता। कहां लगता है। सिनेमा में, नाच घर में। हर वस्तु समय पर ठीक होती है। देख तुने 300 रुपये के बढ़िया जूते खरीदे हैं पर रोटी खाते समय अपनी थाली में सजाकर रखेगा तो पागल कहलायेगा। यह तेरा जीवन निर्माण काल है। ब्रह्मचर्य, त्याग और तपस्या भट्टी में अपने समस्त शरीर को तपाकर कुन्दन बनाले। विद्या का अर्जन कर ले। जीवन में कितने कष्ट या कठिनाईयां आने वाली है, वह तू आज नहीं जान सकता। परन्तु यदि जीवन में सफलता की कामना है। बड़ा बनने की चाहना है। सम्मान की भूख है तो आज इस विद्यार्थी काल में विद्या का भण्डार संचित कर ले और अपने शरीर को आने वाले समय के लिए पत्थर-सा मजबूत बनाले अश्मा भव, परशुर्भव, हिरण्य-मस्तृतं भव।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान (मासिक) के नियम

1. 'जनज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जन-ज्ञान' के रैपर पर लिखे पते पर अंकित रहती है।)
2. 'जन-ज्ञान' प्रतिमास तीन या चार तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है।
4. कागज, छपाई और डाक-शुल्क में अत्यधिक वृद्धि के कारण फरवरी सन् 1987 से 'जन-ज्ञान' की एक प्रति का मूल्य तीन रुपये पचास पैसे कर दिया गया है। वार्षिक मूल्य पैंतीस रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न रहता है।
6. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेज दिया करें। मनीआर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जायेगा। वी. पी. में 7 रु. 50 पैसे का डाक व्यय अतिरिक्त लगता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्था को।
7. 'जन-ज्ञान' की वी. पी. वापिस आने पर संस्था को 7.50 पैसे की हानि उठानी पड़ती है। अतः सदस्यों से निवेदन है कि वे (हमारे भेजे पोस्ट कार्ड पर) उत्तर देने की कृपा अवश्य किया करें।
8. जनज्ञान का विशेषांक न मिलने पर दोबारा रजिस्ट्री से ही भेजा जायेगा इसके लिए न मिलने की शिकायत के साथ दोबारा भेजने हेतु पाँच रुपये अवश्य भेजें।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिये

1. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	60 पैसे
2. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	60 पैसे
3. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	60 पैसे
4. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	5 रु.
5. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	60 पैसे
6. पोस्टर—दो प्रकार के	1.20 पैसे
7. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	60 पैसे
8. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	60 पैसे
9. हिन्दू जागो—देश बचाओ !	60 पैसे
10. इस्लाम एक परिचय	60 पैसे
11. Bible in the Balance	1 रु.
12. A Challenge to the Christian Faith	30 पैसे
13. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	60 पैसे
14. पादरियों को चुनौती	60 पैसे
15. बाइबिल को चुनौती	60 पैसे
16. क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	60 पैसे
17. ...और पादरी भाग गया	60 पैसे
18. Christianity Unmasked	6 रु.
19. The Clarion Call	60 पैसे
20. जनज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	6 रु.
21. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	60 पैसे
22. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	60 पैसे
23. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	60 पैसे
24. हिन्दू जागेगा : देश का संकट भागेगा	60 पैसे

1000 पुस्तकें मंगाने पर 50% और 500 पुस्तकें मंगाने पर 20% छूट
प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम एक चौथाई धन पेशगी भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

1. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

2. मजहब के आधार पर पुलिस और अन्य सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

3. कश्मीर असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपेठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

4. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

5. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

6. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

7. कश्मीर सम्बन्धी धारा 370 तुरन्त हटाई जाए और वहाँ भारत के नागरिकों के बसने की व्यवस्था हो।

8. मजहब के नाम पर अधिकार माँगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

9. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उनको वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

10. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

11. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

आर्य समाज के प्रचार में तेजी लाने, ऋषिका सन्देश घर घर पहुंचाने, हेतु, उत्कृष्ट कैसेट आज ही मंगाइये ।

कैसेट नं	
1. वैदिक संध्या हवन-(स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सहित)	25.00 रु.
2. भक्ति भजनावली, गायक-गणेश विद्यालङ्कार व वन्दना बाजपेयी	25.00 रु.
3. गायत्री महिमा, गायत्री मंत्र की विशद् व्याख्या (पिता-पुत्र संवाद में)	25.00 रु.
4. महर्षि दयानन्द, गायक बालूलाल राजस्थानी व जयश्री शिवराम	25.00 रु.
5. आर्य भजन माला, गायक-संगीता, दीपक, सोहिणी, स्मिता व देवव्रत शास्त्री	25.00 रु.
6. योगासन एवं प्राणायाम स्वयं शिक्षक, प्रशिक्षण, डॉ. देवव्रत आचार्य	25.00 रु.
7. आर्य संगीतिका, गायिका-माता शिवराजवती आर्या	50.00 रु.
8-9 महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कैसेट) (स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन)	30.00 रु.
10. पथिक भजन स्मृति, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक	30.00 रु.
11 सत्यपाल पथिक भजनावली, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक	30.00 रु.
12 मुसाफिर भजन स्मृति, कुंवर महिपालसिंह आर्य द्वारा गाये गये कुंवर मुखलाल आर्य मुसाफिर के भजन	30.00 रु.
13. श्रद्धा, प्रसिद्ध फिल्मी गायिका आशा भोसले एवं दीपक चौहान	30.00 रु.
14. आर्य भजनावली, फिल्मी संगीतकार एवं गायक-वेदपाल वर्मा	30.00 रु.
15. वेद गीताञ्जली, गीतकार व गायक-सत्यकाम विद्यालङ्कार	30.00 रु.
16. भजन सुधा, श्री. प्रह्लादजी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन	30.00 रु.
17-18 वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कैसेट) मन्त्रोच्चारण - स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती प्रथम - प्रातः प्रार्थना, सन्ध्या, ईश्वर प्रार्थना, दैनिक यज्ञ, यज्ञप्रार्थना। द्वितीय - स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, बृहद्यज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ पाक्षिक यज्ञ दैनिक उपयोगी मन्त्र, शिवसंकल्प पाठ।	60.00 रु.

कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ अग्रिम भेजिये ।

5 या उससे अधिक कैसेटों के आदेश पर डाक तथा पैकिंग व्यय फ्री ।

5 से कम के लिये कृपया 13 रू. अतिरिक्त डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये ।

वी. पी. पी. नहीं ।

भेंट - दस कैसेट मंगाने वालोंको एक कैसेट मुफ्त ।

प्राप्तिस्थान - संसार साहित्य मण्डल

141, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-400 082

फोन-5617137

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य 500 रु०
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	80 ,,
3	वेद ज्योति	15 ,,
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	30 ,,
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	20 ,,
6.	अथर्ववेद परिचय	6 ,,
7.	संस्कार विधिः (सजिल्द)	20 ,,
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	30 ,,
9.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा० रामनाथ वेदालंकार)	30 ,,
10.	सत्यार्थ-प्रकाश (10"×15") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	151 ,,
	,, ,, (आर्ट पेपर पर)	201 ,,
11.	ज्योति-स्तम्भ	10 ,,
12.	वैदिक सम्पत्ति	101 ,,
13.	योगासन	2 ,,
14.	योग और ब्रह्मचर्य	3 ,,
15.	Concept of God	3 ,,
16.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	25 ,,
17.	LIGHT OF TRUTH	50 ,,
18.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	6 ,,
19.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	50 ,,
20.	संक्षिप्त महाभारत	50 ,,
21.	संक्षिप्त रामायण	10 ,,
22.	गायत्रीमंत्र(चार्ट) हिन्दी व्याख्यासहित (दोनों ओर पत्ती लगा)	1.50 ,,

कम से कम दस प्रतियां मंगवायें। सूचीपत्र मुफ्त। आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

कार्यालय :
2286, आर्यसमाज रोड
करोलबाग, नई दिल्ली-110005

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-1100036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान | पौष | -201
(मासिक) | संवत् २०४४ | N. R. 10719/65
P. O. अलीपुर दिल्ली-३६ | सम्बर १९८७

दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पण्डिता राकेश रानी जी
के पूज्य पिता स्वर्गीय पण्डित रामचरण जी शर्मा,
३ दिसम्बर को जिनकी छठी
पुण्यतिथि है।

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेश रानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय
दिल्ली-36 से मुद्रित एवं प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi